पाठ्यक्रम संरचना (Course Structure)

सेमेस्टर	पत्र (Paper)	कोर कोर्स (Core Course)	विभागीय चयनित पाठ्यक्रम (Departmental Elective Course)	शोध परियोजना (Research Project)	क्रेडिट (Credit)	अंक (Marks)
प्रथम सेमेस्टर 1st Semester	5	4	1 (शोध परियोजना का विकल्प)	1	20 (5x4)	500/400• (100x5)
द्वितीय सेमेस्टर 2nd Semester	5	4	1 (शोध परियोजना का विकल्प)	1	20 (5x4)	500 (100x5)
तृतीय सेमेस्टर 3rd Semester	5	2	2	1	20 (5x4)	400 (100x4))
चतुर्थ सेमेस्टर 4th Semester	5	2	2	1	20 (5x4)	500 (100x5)
कुल	20	12	6	4	100	1900

- शोध परियोजना करने वाले विद्यार्थियों हेतु।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुरूप चयन आधारित सेमेस्टर प्रणाली (CBCS) पर आधारित स्नातकोत्तर हिन्दी का पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम–विवरण

पत्र–संकेत संख्या (Paper code)	पत्र का नाम (Paper's Name)	पाठ्यक्रम की प्रकृति	क्रेडिट	अंक	कुल क्रेडिट
		प्रथम सेमेस्टर			
MHNC-401	शोध प्रविधि	आधार पत्र (Core Paper)	4	100	20
MHNC-402	आदिकालीन एवं मध्यकालीन मुक्तक काव्य	आधार पत्र (Core Paper)	4	100	
MHNC-403	हिन्दी नाट्य साहित्य	आधार पत्र (Core Paper)	4	100	
MHNC-404	भारतीय काव्यशास्त्र	आधार पत्र (Core Paper)	4	100	
MHNP-405 MHNO-405 (क/ख)	हिन्दी शोध परियोजना अथवा लोक साहित्य/तुलनात्मक अध्ययन	शोध–आधारित (Research Based) अथवा विकल्प पत्र	4	0/100	
		द्वितीय सेमेस्टर			
MHNC-411	हिन्दी आलोचना एवं आलोचक	आधार पत्र (Core Paper)	4	100	20
MHNC-412	आदिकालीन एवं मध्यकालीन प्रबन्ध–काव्य	आधार पत्र (Core Paper)	4	100	
MHNC-413	राष्ट्रीय चेतना का हिन्दी काव्य	आधार पत्र (Core Paper)	4	100	
MHNC-414	पाश्चात्य काव्यशास्त्र	आधार पत्र (Core Paper)	4	100	
MHNC-415	हिन्दी शोध परियोजना अथवा भाषा विज्ञान तथा देवनागरी लिपि/प्रवासी हिन्दी साहित्य	शोध–आधारित (Research Based) अथवा विकल्प पत्र	4	100	
		तृतीय सेमेस्टर			
MHNC-501	विविध गद्य विधाएँ	आधार पत्र (Core Paper)	4	100	20
MHNC-502	आधुनिक काव्य	आधार पत्र (Core Paper)	4	100	
MHNE-503(क) MHNE-503 (ख)	प्रयोजनमूलक हिन्दी मीडिया लेखन	वैकल्पिक पत्र (Elective Paper) कौशलपरक	4	100	
MHNE-504 (क) MHNE-504 (ख)	भारतीय साहित्य अवधी साहित्य	वैकल्पिक पत्र (Elective Paper) राष्ट्रीय/स्थानीय	4	100	
MHNP-505	हिन्दी शोध परियोजना	शोध–आधारित (Research Based)	4		
		चतुर्थ सेमेस्टर			
MHNC-511	हिन्दी की लम्बी कविताएँ	आधार पत्र (Core Paper)	4	100	20
MHNC-512	छायावादोत्तर काव्य	आधार पत्र (Core Paper)	4	100	
MHNE- 513 (क)	हिन्दी साहित्य और सिनेमा	वैकल्पिक पत्र (Elective Paper) कौशलपरक	4	100	
MHINE-513 (ख)	पटकथा एवं विज्ञापन–लेखन				
MHNE-514 (क)	हिन्दी लोक साहित्य	वैकल्पिक पत्र (Elective Paper) राष्ट्रीय/स्थानीय	4	100	
MHNE-514 (ख)	भोजपुरी साहित्य				
MHNE-515	हिन्दी शोध परियोजना	शोध–आधारित (Research Based)	4	100	

कूट–संकेत :

MHNC : एम ए. हिन्दी कोर पेपर; MHNM : एम ए. हिन्दी माइनर इलैक्टिव पेपर; MHNE : एम ए. हिन्दी इलैक्टिव पेपर; MHNP : एम ए. हिन्दी शोध परियोजना।

पाठ्यक्रम से सम्बन्धित कूट संख्या (कोर्स कोड) में पहला अक्षर M मास्टर (स्नातकोत्तर) डिग्री का बोधक है, बाद के दो अक्षर HN हिन्दी विषय के संकेतक हैं और अन्तिम तीसरा अक्षर C, E आदि पाठ्यक्रम

की प्रकृति का। अंकों में प्रथम अंक स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के वर्ष का द्योतक हैं और बाद के दो अंक प्रश्नपत्र की संख्या के। उदाहरण के लिये MHNC-401 में M का अर्थ एम. ए. है, HN का अर्थ हिन्दी (Hindi) है, C का कोर पेपर (Core Paper), 4 का चतुर्थ वर्ष और 01 का प्रथम प्रश्नपत्र है।

इसी तरह कूट अक्षरों का अर्थ इस प्रकार होगा–

C - Core Paper; E- Elective; P- Project; M- Miner Elective

आवश्यक निर्देश :

1. यह पाठ्यक्रम एम. ए. में हिन्दी विषय का चयन करने वाले सभी विद्यार्थियों के लिए है।
2. एम. ए. प्रथम वर्ष के दोनों सेमेस्टर (प्रथम एवं द्वितीय) के प्रथम चार–चार प्रश्नपत्र सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य (CORE PAPER) होंगे। पांचवां प्रश्नपत्र विकल्प के रूप में होगा। जिन विद्यार्थियों 75 प्रतिशत या उससे अधिक प्राप्तांकों के साथ हिन्दी विषय लेकर स्नातक तृतीय वर्ष की परीक्षा उत्तीर्ण की होगी, वे इस प्रश्नपत्र के स्थान पर विभाग के किसी शिक्षक के निर्देशन में शोध परियोजना कर सकते हैं। शेष विद्यार्थी शोध परियोजना के स्थान पर विकल्प प्रश्नपत्र का अध्ययन करेंगे।
3. द्वितीय वर्ष के तृतीय एवं चतुर्थ सेमेस्टर में प्रथम दो–दो प्रश्नपत्र अनिवार्य पत्र (CORE PAPER) के रूप में होंगे। शेष दो–दो प्रश्नपत्रों के दो–दो विकल्प क, ख के रूप में दिये गये हैं। प्रति प्रश्नपत्र विद्यार्थी इनमें से किसी एक का चयन अपनी रुचि और सुविधा के अनुसार कर सकते हैं।

4- सभी विद्यार्थियों को द्वितीय वर्ष में एक शोध परियोजना करनी होगी जो 8 (प्रति सेमेस्टर 4–4) क्रेडिट की होगी। शोध परियोजना विद्यार्थी किसी विभागीय शिक्षक के निर्देशन में करेंगे। विद्यार्थी प्रत्येक वर्ष के अन्त में दोनों सेमेस्टर (प्रथम एवं द्वितीय तथा तृतीय एवं चतुर्थ) में शोध परियोजना के अन्तर्गत किये गये कार्य के आधार पर एक शोध–प्रबन्ध तैयार करेंगे, जिसका मूल्यांकन बाह्य एवं आन्तरिक परीक्षकों द्वारा किया जायेगा। इस लघु शोध प्रबन्ध के लिये 100 अंक निर्धारित हैं।

सामान्य परिणाम (General Outcome)

- विद्याथियों को हिन्दी भाषा के साथ–साथ उसमें उपलब्ध साहित्य का आधारभूत ज्ञान के साथ रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे।
- साहित्य के मूलभूत स्वरूप, यथा विभिन्न विधाओं, हिन्दी के रोज़गारपरक स्वरूप आदि की जानकारी प्राप्त होगी।
- हिन्दी में रचनात्मक तथा व्यावसायिक कौशल प्राप्त होगा।
- विद्यार्थियों में मानवीय संवेदना, सामाजिक समरसता, साहित्यिक विवेक, भाषिक कौशल, राष्ट्रीयता की भावना तथा नैतिकता का विकास होगा।
- 'प्रयोजनमूलक हिन्दी'; 'मीडिया लेखन'; 'पटकथा एवं विज्ञापन लेखन' तथा 'हिन्दी साहित्य एवं सिनेमा' जैसे पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी हिन्दी भाषा एवं साहित्य के नवन्नव आयामों से अवगत होकर अधिक रोजगार–क्षम हो सकेंगे।

<table>
<tr><td colspan="4">एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="4">प्रथम सेमेस्टर</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="2">पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :
MHNC401</td><td colspan="2">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
शोध प्रविधि</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="4">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
काव्यशास्त्र का ज्ञान काव्य को सम्यक् रीति से जानने–समझने के लिये आवश्यक होता है। भारत में काव्य की ही भांति काव्यशास्त्र की भी परम्परा अत्यन्त प्राचीन और समृद्ध है। हिन्दी के आचार्यों ने इसमें योगदान देकर इसे और समयानुकूल तथा संगत बनाया है। प्रस्तुत पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख तत्त्वों से अवगत कराना है।</td><td></td></tr>
<tr><td>क्रेडिट : 4</td><td>पूर्णांक :
25+75=100</td><td colspan="2">उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**</td><td></td></tr>
<tr><td colspan="4">कुल व्याख्यान संख्या : 60</td><td></td></tr>
<tr><td>इकाई</td><td colspan="2">पाठ्यवस्तु</td><td>व्याख्यान संख्या</td><td>क्रेडिट संख्या</td></tr>
<tr><td>1.</td><td colspan="2">शोध का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप; शोध के तत्त्व; शोध और आलोचना; शोध–चोरी (Plagiarism) एवं प्रतिलिप्याधिकार (Copyright)</td><td>15</td><td>1</td></tr>
<tr><td>2.</td><td colspan="2">शोध के प्रकार :
साहित्येतिहासिक शोध; काव्यशास्त्रीय शोध; भाषावैज्ञानिक शोध; शैलीवैज्ञानिक शोध; लोकतात्कि शोध; अन्तर्विद्यावर्ती शोध; तुलनात्मक शोध; पाठानुसन्धान</td><td>15</td><td>1</td></tr>
<tr><td>3.</td><td colspan="2">शोध की पद्धतियाँ; शोधार्थी के गुण; शोध के सोपान; शोध विषय; रूपरेखा निर्माण; सामग्री–संकलन;</td><td>15</td><td>1</td></tr>
<tr><td>4.</td><td colspan="2">शोध–प्रबन्ध–लेखन
शोध–प्रबन्ध के तत्त्व; उद्धरण–लेखन; सन्दर्भोल्लेख एवं पाद–टिप्पणी; उपसंहार एवं परिशिष्ट; सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची</td><td>15</td><td>1</td></tr>
</table>

सहायक ग्रन्थ :

1. डॉ. हरिश्चन्द्र वर्मा; शोध–प्रविधि;हरियाणा ग्रन्थ अकादमी, पंचकूला; तृतीय संस्करण 2016।
2. एस.एन. गणेशन; अनुसन्धान प्रविधिः सिद्धान्त और प्रक्रिया; लोकभारती प्रकाशान, इलाहाबाद; संस्करण 2009।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष

प्रथम सेमेस्टर

पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
MHNC402	**आदिकालीन एवं भक्तिकालीन मुक्तक काव्य**

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

इस पत्र का उद्देश्य हिन्दी साहित्य के आदिकाल से लेकर भक्तिकाल तक के प्रमुख प्रतिनिधि कवियों के काव्य से विद्यार्थियों का परिचय करवाना है। आदिकालीन और भक्तिकालीन हिन्दी साहित्य प्रबन्ध एवं मुक्तक दोनों रूपों में रचा गया है तथा भारतीय जनमानस को इसने काफी गहराई तक प्रभावित किया है। इस पत्र में आदिकालीन एवं मध्यकालीन मुक्तक काव्य को रखा गया है।

क्रेडिट : 4	पूर्णांक : 25+75=100	उत्तीर्णांक : 36 प्रतिशत

कुल व्याख्यान संख्या : 60

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	**क. सरहपाद–दोहाकोश** ख. **गोरखनाथ–सबदी** पाठ्यपुस्तक : **आदिकालीन काव्य;** सम्पादक–डॉ. वासुदेव सिंह; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी। **आलोचना के प्रमुख बिन्दु :** भक्ति–काव्य पर सिद्ध–नाथ साहित्य का प्रभाव; सिद्ध साहित्य और सरहपाद; सरहपाद का काव्य–सौष्ठव; नाथ–पन्थ और गोरखनाथ; गोरखनाथ के काव्य की प्रासंगिकता; गोरखनाथ का काव्य–सौन्दर्य।	15	1
2.	**कबीरदास :** **पाठ्य पुस्तक– कबीर;** आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली। **पाठांश–** पद सं.– 1, 2, 33, 41, 123, 130, 134, 160, 163, 168, 191, 199, 224, 247 तथा 256। **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : कबीर की भक्ति–भावना; कबीर का रहस्यवाद; कबीर का समाज–दर्शन और उसकी प्रासंगिकता; कबीर की विद्रोह–भावना या क्रान्तिकारी चेतना; कबीर–काव्य का दार्शनिक पक्ष; कबीर : कवि के रूप में।	15	1
3.	**सूरदास :** पाठ्य पुस्तकः **भ्रमरगीत सार**; आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली। पद संख्या–9, 23, 25, 34, 62, 64, 65, 82, 85, 89, 95, 97, 115, 122, 130, 171, 384, 400। **आलोचना के प्रमुख बिन्दु–** भ्रमरगीत काव्य–परम्परा और सूरदास; भ्रमरगीत : अन्तर्वस्तु तथा विदग्धता; सूर की भक्ति–भावना; माधुर्य और श्रृंगार–वर्णन; वात्सल्य–वर्णन; लोक तत्त्व; काव्य–वैशिष्ट्य।	15	1
4.	**मीराबाई :** **मीरा का काव्य–विश्वनाथ त्रिपाठी** निपट बंकट छब अटके; म्हारां री गिरधर गोपाल दूसरा णां कूयां; माई सांवरे रंग राची; मैं गिरधर के घर जाऊं; सीसोद्यो रूठ्यो म्हांरो कोई करलेसी; हेली म्हासूं हरि बिन रह्यो न जाय; सांबरे मार्‍या तीर; मुरलिया बाजा जमणा तीर; भज मण चरण कंवल अवणासी।	15	1

	मीराबाई की भक्ति; कृष्ण–भक्ति काव्य–परम्परा में मीराबाई का स्थान; मीरा की विद्रोही चेतना; मीराबाई की काव्यगत विशेषताएं।		

पाठ्यक्रम–परिणाम :

1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी हिन्दी साहित्य की प्राचीन एवं मध्यकालीन परम्परा को जान सकेंगे।
2. अपनी साहित्यिक विरासत को समझते हुए उस पर गर्व कर सकेगे।
3. लगभग 800 वर्षों की हिन्दी कविता के माध्यम से विभिन्न युगीन सन्दर्भों को समझ सकेंगे।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. कुल मिलाकर पांच प्रश्न पूछे जायेंगे, सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। प्रथम प्रश्न को छोड़कर अन्य सभी प्रश्नों के लिये समान रूप से 12 अंक निर्धारित रहेंगे।
2. प्रथम प्रश्न में प्रत्येक इकाई से एक–एक व्याख्या पूछी जायेगी। इस तरह विद्यार्थी को व्याख्या हेतु पूछे गये कुल पांच अवतरणों में से किन्हीं तीन की व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक व्याख्या के लिये 9 अंक निर्धारित रहेंगे। इस तरह से यह प्रश्न कुल 27 अंकों का होगा।
3. शेष चार प्रश्नों में से तीन प्रश्न किन्हीं तीन अलग–अलग इकाइयों से पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न का विकल्प 'अथवा' करके पूछा जायेगा जो उसी इकाई से रहेगा।
4. अन्तिम पांचवा प्रश्न शेष दो इकाइयों से पूछा जायेगा। मूल प्रश्न एक इकाई से तथा उसी का विकल्प प्रश्न शेष अन्य इकाई से रहेगा।
5. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखें।

सहायक ग्रंथ :

1. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का आदिकाल; बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
2. डॉ. सदानन्द प्रसाद गुप्त (प्रधान संपादक); नाथपंथ : साधना और साहित्य; प्रथम संस्करण–2020; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
3. आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी; नाथ सम्प्रदाय; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. पुरुषोत्तम अग्रवाल, अकथ कहानी प्रेम की (कबीर की कविता और उनका समय); दूसरा संस्करण–2010; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. रामचन्द्र तिवारी; कबीर मीमांसा; संस्करण–2011; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. रामकिशोर शर्मा; कबीर ग्रन्थावली (सटीक); नवम संस्करण–2013; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
7. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, मध्यकालीन धर्म साधना; साहित्य भवन, इलाहाबाद।
8. डॉ. नगेन्द्रनाथ उपाध्याय, नाथ पंथ और संत साहित्य; काशी हिन्दू विश्वविद्यालय प्रकाशन।
9. नन्द किशोर पाण्डेय, संत साहित्य की समझ; यश पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली; संस्करण–2018।
10. नन्द किशोर पाण्डेय, रज्जब; साहित्य अकादमी, दिल्ली; प्रथम संस्करण–2017।
11. हरबंसलाल शर्मा, सूरदास; पेपरबैक दूसरा संस्करण–2011; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
12. डॉ. रामफेर त्रिपाठी; सूरदास; तृतीय संस्करण–2013, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
13. पूनम कुमारी; स्त्री चेतना और मीरा का काव्य; संस्करण–2009; अनामिका प्रकाशन, दिल्ली।
14. रामदेव शुक्ल; रसमूर्ति घनानन्द; प्रथम संस्करण–2021; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
15. डॉ. बच्चन सिंह; बिहारी का नया मूल्यांकन; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
16. रवीन्द्रकुमार सिंह; बिहारी सतसई : सामाजिक–सांस्कृतिक सम्बन्ध; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष **प्रथम सेमेस्टर**		
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC403**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **हिन्दी नाट्य साहित्य**	
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : गद्य साहित्य में नाटक, उपन्यास एवं कहानी अत्यन्त लोकप्रिय विधाएं हैं। प्रस्तुत पत्र विद्यार्थियों को हिन्दी नाटक एवं कथा साहित्य के वैशिष्ट्य से अवगत कराने के उद्देश्य से तैयार किया गया है। इसमें प्रतिनिधि रचनाओं के रूप में हिन्दी की बहुख्यात् नाट्य एवं कथा–रचनाओं को रखा गया है।		
क्रेडिट : **4**	पूर्णांक : **25+75=100**	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**
कुल व्याख्यान संख्या : 60		

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	नाटक का अर्थ, परिभाषा एवं प्रकार; नाटक के तत्त्व; संस्कृत नाट्य–परम्परा और हिन्दी नाटक की पृष्ठभूमि; हिन्दी नाटक विकास–यात्रा; एकांकी का स्वरूप; हिन्दी एकांकी का उद्भव और विकास।	15	1
2.	**नाटक–1:** **स्कन्दगुप्त**–जयशंकर प्रसाद **आलोचना के प्रमुख बिन्दु :** जयशंकर प्रसाद का नाट्य–शिल्प; नाटक के तत्त्वों के आधार पर 'स्कन्दगुप्त' की समीक्षा; 'स्कन्दगुप्त' में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक चेतना; 'स्कन्दगुप्त' में युगबोध; स्कन्दगुप्त के प्रमुख पात्र।	15	1
3.	**नाटक–2 :** **आषाढ़ का एक दिन**–मोहन राकेश **आलोचना के प्रमुख बिन्दु :** मोहन राकेश की नाट्य–कला; नाटक के तत्त्वों के आधार पर 'आषाढ़ का एक दिन' की समीक्षा; 'आषाढ़ का एक दिन' के नायक–नायिका एवं प्रतिनायक का चरित्र–चित्रण	15	1
4.	**एकांकी :** **अंधेर नगरी**–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र **औरंगजेब की आखिरी रात**–डॉ. रामकुमार वर्मा **भोर का तारा**–जगदीशचन्द्र माथुर **स्ट्राइक**–भुवनेश्वर **आलोचना के प्रमुख बिन्दु :** एकांकियों की समीक्षा तथा एकांकीकारों की एकांकी कला।	15	1

पाठ्यक्रम–परिणाम :

1. विद्यार्थी चयनित रचनाओं के माध्यम से हिन्दी नाट्य एवं कथा साहित्य के वैशिष्ट्य को जान सकेंगे और उसके व्यापक अध्ययन के लिये प्रेरित होंगे।
2. नाट्य एवं कथा साहित्य के अध्ययन के आलोचकीय विवेक से सम्पन्न हो सकेंगे।
3. साहित्यिक अभिरुचि से सम्पन्न विद्यार्थियों में रचनात्मक कौशल का विकास हो सकेगा।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. कुल मिलाकर पांच प्रश्न पूछे जायेंगे, सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। प्रथम प्रश्न को छोड़कर अन्य सभी प्रश्नों के लिये समान रूप से 12 अंक निर्धारित रहेंगे।
2. प्रथम प्रश्न में प्रत्येक इकाई से एक–एक व्याख्या पूछी जायेगी। इस तरह विद्यार्थी को व्याख्या हेतु पूछे गये कुल पांच अवतरणों में से तीन की व्याख्या करनी होगी। प्रत्येक व्याख्या के लिये 9 अंक निर्धारित रहेंगे। इस तरह से यह प्रश्न कुल 27 अंकों का होगा।
3. शेष चार प्रश्नों में से तीन प्रश्न किन्हीं तीन अलग–अलग इकाइयों से पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न का विकल्प 'अथवा' करके पूछा जायेगा जो उसी इकाई से रहेगा।
4. अन्तिम पांचवा प्रश्न शेष दो इकाइयों से पूछा जायेगा। मूल प्रश्न एक इकाई से तथा उसी का विकल्प प्रश्न शेष अन्य इकाई से रहेगा।
5. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखें।

सहायक ग्रंथ :

1. बच्चन सिंह; हिन्दी नाटक; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
2. सत्येन्द्रकुमार तनेजा (सम्पादक); नाटककार जयशंकर प्रसाद; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
3. सत्येन्द्रकुमार तनेजा (सम्पादक); नाटककार भारतेन्दु की रंग–परिकल्पना; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
4. सिद्धनाथ कुमार; हिन्दी एकांकी; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
5. रामस्वरूप चतुर्वेदी; समकालीन हिन्दी साहित्य : विविध परिदृश्य; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष				
प्रथम सेमेस्टर				
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC404**		पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **भारतीय काव्यशास्त्र**		
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : काव्यशास्त्र का ज्ञान काव्य को सम्यक् रीति से जानने–समझने के लिये आवश्यक होता है। भारत में काव्य की ही भांति काव्यशास्त्र की भी परम्परा अत्यन्त प्राचीन और समृद्ध है। हिन्दी के आचार्यों ने इसमें योगदान देकर इसे और समयानुकूल तथा संगत बनाया है। प्रस्तुत पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख तत्त्वों से अवगत कराना है।				
क्रेडिट : 4	पूर्णांक : **25+75=100**	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**		
कुल व्याख्यान संख्या : 60				

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	भारतीय काव्यशास्त्र का संक्षिप्त इतिहास; काव्य के लक्षण तथा स्वरूप; काव्य–प्रयोजन; काव्य–हेतु, काव्य के प्रकार। काव्यगुण; काव्यदोष। शब्दशक्तियाँ– अभिधा, लक्षणा तथा व्यंजना।	15	1
2.	**काव्य के सिद्धांत :** रस, ध्वनि, रीति, वक्रोक्ति, तथा औचित्य सिद्धांतों का परिचय।	15	1
3.	**अलंकार परिचय :** अलंकार सिद्धान्त तथा निम्नलिखित अलंकारों का सोदाहरण परिचय– श्लेष, वक्रोक्ति, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, सन्देह, भ्रान्तिमान, अतिशयोक्ति, अन्योक्ति, विशेषोक्ति, विभावना, द्रष्टान्त, उदाहरण, प्रतीप, काव्यलिंग, अपह्नुति, असंगति तथा विरोधाभास।	15	1
4.	**छन्द परिचय–** छन्द की परिभाषा और तत्त्व; छन्दों का वर्गीकरण; काव्य में छन्दों का महत्त्व। अग्रांकित छन्दों के लक्षण और उदाहरण– वंशस्थ, वसन्ततिलका; मन्दाक्रान्ता; शार्दूलविक्रीडित; कवित्त, सवैया, दोहा, सोरठा, चौपाई, रोला, बरवै, हरिगीतिका, कुण्डलिया, छप्पय तथा मुक्त छन्द।	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. इस पत्र के अध्ययन से विद्यार्थी भारतीय काव्यशास्त्रीय परम्परा से परिचित हो सकेगे।
2. भारतीय काव्यशास्त्र और उसके प्रमुख तत्वों से अवगत हो सकेंगे।
3. काव्यशास्त्र के अध्ययन से विद्यार्थियों में साहित्य के सम्यक् अनुशीलन का विवेक उत्पन्न हो सकेगा।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. कुल मिलाकर पांच प्रश्न पूछे जायेंगे, सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये समान रूप से 15 अंक निर्धारित रहेंगे।
2. प्रथम प्रश्न में प्रत्येक इकाई से एक–एक टिप्पणी पूछी जायेगी। इस तरह विद्यार्थी को कुल पांच टिप्पणियां लिखनी होंगीं।
3. शेष चार प्रश्नों में से तीन प्रश्न किन्हीं तीन अलग–अलग इकाइयों से पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न का विकल्प 'अथवा' करके पूछा जायेगा जो उसी इकाई से रहेगा।

4. अन्तिम पांचवा प्रश्न शेष दो इकाइयों से पूछा जायेगा। मूल प्रश्न एक इकाई से तथा उसी का विकल्प प्रश्न शेष अन्य इकाई से रहेगा।
5. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखें।

सहायक ग्रंथ :

1. पी.बी काणे, हिस्टरी आफ संस्कृत पोयटिक्स; मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
2. देश पाण्डे, साहित्य शास्त्र; पापुलर बुक डिपो, पूना।
3. डॉ. नगेन्द्र, काव्यशास्त्र की भूमिका; नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
4. डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी, भारतीय काव्यशास्त्र के नये क्षितिज; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. डॉ. भगीरथ मिश्र; नया काव्यशास्त्र; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
6. पं. बलदेव उपाध्याय; संस्कृत आलोचना; षष्ठ संस्करण–2019; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
7. भगीरथ मिश्र; हिन्दी काव्यशास्त्र का इतिहास।
8. डॉ. भगीरथ मिश्र; काव्यशास्त्र; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
9. प्रो. धर्मदेव तिवारी 'शास्त्री'; सुगम भारतीय काव्यशास्त्र; संस्करण–2016; वन्द्रमुखी प्रकाशन, दिल्ली।
10. गणपतिचन्द्र गुप्त; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त; पुनर्मुद्रण–2014; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
11. रामचन्द्र तिवारी; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा; द्वितीय संस्करण–2007; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
12. देवेन्द्रनाथ शर्मा; काव्य के तत्व; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

.

<table>
<tr><td colspan="4" align="center">एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष</td></tr>
<tr><td colspan="4" align="center">प्रथम सेमेस्टर</td></tr>
<tr><td colspan="2" align="center">पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :
MHNP405</td><td colspan="2" align="center">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
हिन्दी शोध परियोजना</td></tr>
<tr><td colspan="4">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों में शोध एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास करना है। उच्च शिक्षा का महत् उद्देश्य शोध है। किसी विषय पर शोध परियोजना करने से विद्यार्थियों में शोध–क्षमता का विकास हो और वे आगे चलकर एक अच्छे शोधकर्ता बन सकें, इस दृष्टि से इस पत्र की आयोजना पाठ्यक्रम में की गयी है।</td></tr>
<tr><td colspan="2">क्रेडिट : 4</td><td>पूर्णांक :</td><td>उत्तीर्णांक : 36 प्रतिशत</td></tr>
<tr><td colspan="4" align="center">कुल व्याख्यान संख्या : 60</td></tr>
<tr><td>इकाई</td><td colspan="2">पाठ्यवस्तु</td><td>व्याख्यान संख्या</td></tr>
<tr><td>1.</td><td colspan="2">इस पत्र के अन्तर्गत ऐसे विद्यार्थी जिन्होंने हिन्दी विषय लेकर बी. ए. की परीक्षा 75 प्रतिशत या उससे अधिक प्राप्तांकों के साथ उत्तीर्ण की हो, वे किसी शिक्षक के निर्देशन में हिन्दी भाषा एवं साहित्य से जुड़े किसी विषय का चयन कर एक शोध परियोजना पर कार्य करेंगे। शेष विद्यार्थी विकल्प के रूप में दिये गये प्रश्नपत्र का अध्ययन करेंगे।</td><td>15</td></tr>
</table>

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थियों को शोध का व्यवहारिक अभ्यास होगा।
2. पीएच.डी. करने से पूर्व विद्यार्थी शोध की सही प्रविधि जान सकेगे और शोध कार्य की बारीकियों को समझकर उसमें दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी के एक गम्भीर अध्येता तथा उत्कृष्ट शोधार्थी के रूप में विकसित होने में यह पत्र सहायक होगा।

<table>
<tr><td colspan="3">एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष</td></tr>
<tr><td colspan="3">प्रथम सेमेस्टर</td></tr>
<tr><td colspan="2">पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :
MHNO405 (क)</td><td>पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
लोक साहित्य</td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
काव्यशास्त्र का ज्ञान काव्य को सम्यक् रीति से जानने–समझने के लिये आवश्यक होता है। भारत में काव्य की ही भांति काव्यशास्त्र की भी परम्परा अत्यन्त प्राचीन और समृद्ध है। हिन्दी के आचार्यों ने इसमें योगदान देकर इसे और समयानुकूल तथा संगत बनाया है। प्रस्तुत पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय काव्यशास्त्र के प्रमुख तत्त्वों से अवगत कराना है।</td></tr>
<tr><td>क्रेडिट : 4</td><td>पूर्णांक :
25+75=100</td><td>उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**</td></tr>
<tr><td colspan="3">कुल व्याख्यान संख्या : 60</td></tr>
</table>

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या
1.	**लोक साहित्य का सामान्य परिचय :** लोक की अवधारणा; लोक साहित्य : परिभाषा और स्वरूप; लोक साहित्य का वर्गीकरण; लोक साहित्य की विशेषताएँ एवं महत्त्व। लोक जीवन में लोक साहित्य की स्थिति और भूमिका; लोक साहित्य के अध्ययन की समस्याएं; लोक साहित्य में नित्य नूतनता और प्रसार।	15
2.	**साहित्य, लोक साहित्य और लोक संस्कृति :** लोक साहित्य और साहित्य में अन्तर; लोक साहित्य और साहित्य में पारस्परिक सम्बन्ध (साहित्य में लोक साहित्य के तथा लोक साहित्य में साहित्य के तत्त्वों की व्याप्ति एवं प्रभाव); लोक साहित्य तथा लोक संस्कृति में अंतःसंबंध; लोक साहित्य में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना।	15
3.	**लोक साहित्य की विविध विधाएँ– एक :** लोकगीत : परिभाषा एवं प्रकार; लोकगीतों की विशेषताएँ; लोककथा का अर्थ एवं विशेषताएँ; लोकजीवन में लोककथाओं की भूमिका एवं महत्ता; लोकगाथा : अभिप्राय एवं स्वरूप; लोकगाथा का लोकगीत और लोककथा से अन्तर।	15
4.	**लोक साहित्य की विविध विधाएँ– दो :** लोकनाट्य का अर्थ, स्वरूप एवं प्रकार; लोकनाट्य की विशेषताएँ; लोकसुभाषित का अर्थ तथा भेद; लोकोक्ति का अर्थ एवं वर्गीकरण; मुहावरे और लोकोक्ति में अन्तर।	15

विशेष निर्देश : जिन विद्यार्थियों ने हिन्दी विषय के साथ स्नातक कक्षा 75 प्रतिशत से अधिक अंकों के साथ उत्तीर्ण की होगी, वे इस प्रश्नपत्र के स्थान पर शोध परियोजना पर कार्य करेंगे।

सहायक ग्रन्थ :

डॉ. दिनेश्वर प्रसाद, लोक साहित्य और संस्कृति, लोक भारती प्रकाशन, प्रयागराज, 1973

1. डॉ. श्रीराम शर्मा, लोक साहित्य सिद्धांत और प्रयोग, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1973
2. डॉ. उषा सक्सेना, लोक साहित्य एवं लोक संस्कृति, राजभाषा प्रकाशन, दिल्ली, 2007
3. कृष्णदेव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन प्राइवेट लिमिटेड, प्रयागराज, 1957
4. रामनाथ सुमन, संपादक, सम्मेलन पत्रिका, लोक संस्कृति विशेषांक, प्रयागराज, संवत 2010
5. प्रो. चितरंजन मिश्र एवं दुर्गाप्रसाद ओझा, समकालीन हिंदी एवं अवधी कविता, प्रकाशन केंद्र लखनऊडॉ. श्रीधर मिश्र,
6. भोजपुरी लोक साहित्य : सांस्कृतिक अध्ययन, हिंदुस्तानी एकेडमी, प्रयागराज।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष	
प्रथम सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNO405 (ख)**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **तुलनात्मक साहित्य (हिन्दी एवं नेपाली)**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :

तुलनात्मक अध्ययन आज के समय में एक आवश्यक तथा उपयोगी विषय है। सिद्धार्थ विश्वविद्यालय कपिलवस्तु में स्थित है, जो कि नेपाल के अत्यन्त निकट है। नेपाली भारतीय संविधान में स्वीकृत 22 भाषाओं में से एक है, तो नेपाल में भी हिन्दी बड़े पैमाने पर बोली–समझी जाती है। अतः इस पत्र के अन्तर्गत तुलनात्मक अध्ययन के लिये हिन्दी एवं नेपाली साहित्य को चुना गया है। साहित्य के माध्यम से भारतीय एवं नेपाली समाज–संस्कृति के अन्तर्सम्बन्धों से विद्यार्थियों को अवगत कराना इस पत्र का उद्देश्य है।

क्रेडिट : 4	पूर्णांक : 25+75=100	उत्तीर्णांक : 36 प्रतिशत
कुल व्याख्यान संख्या : 60		

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या
1.	तुलनात्मक अध्ययनः अर्थ एवं स्वरूप; तुलनात्मक अध्ययन का इतिहास; तुलनात्मक अध्ययन के विविध आयाम; भारत में तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता तथा क्षेत्र; हिन्दी में तुलनात्मक अध्ययन की परम्परा और उसका विकास।	15
2.	भारत एवं नेपाल के ऐतिहासिक सम्बन्ध; भारत एवं नेपाल की साझी सांस्कृतिक भूमि; नेपाल में हिन्दी और भारत में नेपाली भाषा; हिन्दी एवं नेपाली भाषा–साहित्य में अन्तर्निहित सांस्कृतिक एकता के सूत्र; हिन्दी एवं नेपाली साहित्य की साझी विरासत।	15
3.	हिन्दी एव नेपाली के एक–एक कवि का तुलनात्मक अध्ययन	15
4.	हिन्दी एवं नेपाली की एक–एक कथा–रचना का तुलनात्मक अध्ययन	15

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. इस पत्र के अध्ययन द्वारा विद्यार्थी तुलनात्मक अध्ययन के स्वरूप, उसमें निहित अध्ययन की सम्भावनाओं तथा इस तरह के अध्ययन की उपयोगिता को जान–समझ सकेंगे।
2. हिन्दी एवं नेपाली भाषा में उपलब्ध साहित्य की समृद्ध परम्परा तथा उसकी प्रमुख विशेषताओं से अवगत हो सकेगे।
3. हिन्दी एव नेपाली के चयनित साहित्यकारों एवं उनकी कृतियों के अध्ययन द्वारा हिन्दी एवं नेपाली साहित्य, समाज तथा संस्कृति के अन्तर्सम्बन्धों को समझकर और भी पारस्परिक निकटता का अनुभव कर सकेंगे।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखने को बाध्य हो।

सहायक ग्रंथ :

1. तुलनात्मक साहित्य की भूमिका; इन्द्रनाथ चौधरी, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
2. तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य; इन्द्रनाथ चौधरी, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
3. तुलनात्मक साहित्य; डॉ. नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
4. भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ; के. सच्चिदानन्दन, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ; रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
6. मराठी साहित्यः विविध परिदृश्य; चन्द्रकान्त वांदिवडेकर, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
7. भारतीय साहित्य; डॉ. नगेन्द्र, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
8. तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप और समस्याएँ; सं. डॉ. म. ह, राजूरकर, डॉ. राजमल बोरा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
9. भाषा और समाज; डॉ. रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

<table>
<tr><td colspan="3">एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष</td></tr>
<tr><td colspan="3">द्वितीय सेमेस्टर</td></tr>
<tr><td>पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :
MHNC411</td><td colspan="2">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
हिन्दी आलोचना और आलोचक</td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
संस्कृत में काव्यशास्त्र की एक सशक्त परम्परा रही है। हिन्दी की आधुनिक आलोचना भारतीय एवं पाश्चात्य– दोनों चिन्तन–सरणियों के समन्वय से और भी पुष्ट हुई है। यह जिन आलोचकों और आलोचना–कृतियों के माध्यम से समृद्ध हुई है, उनमें से कतिपय प्रमुख आलोचकों और उनके अवदान से अवगत कराना ही इस पत्र का उद्देश्य है।</td></tr>
<tr><td>क्रेडिट : **4**</td><td>पूर्णांक :
25+75=100</td><td>उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**</td></tr>
<tr><td colspan="3">कुल व्याख्यान संख्या : 60</td></tr>
</table>

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या
1.	**हिन्दी आलोचना का विकास और मुख्य आलोचना–दृष्टियां :** हिन्दी आलोचना का आरम्भिक स्वरूप; हिन्दी आलोचना का विकास– शुक्ल पूर्व, शुक्ल युग एवं शुक्लोत्तर युग; हिन्दी आलोचना की प्रमुख दृष्टियां– ऐतिहासिक, शास्त्रीय, समाजशास्त्रीय, मार्क्सवादी, मनोविश्लेषणवादी, प्रभाववादी, रूपवादी तथा विमर्शवादी; हिन्दी आलोचना का समकालीन परिदृश्य।	15
2.	**हिन्दी के प्रमुख आलोचक :** 1. आ. रामचन्द्र शुक्ल 2. डॉ. नन्ददुलारे बाजपेयी 3. डॉ. नगेन्द्र	15
3.	**हिन्दी के प्रमुख सांस्कृतिक आलोचक** 1. आ. हजारीप्रसाद द्विवेदी 2. डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी 1. सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय	15
4.	**हिन्दी के प्रमुख मार्क्सवादी आलोचक :** 1. डॉ. रामविलास शर्मा 2. डॉ. नामवर सिंह 3. गजानन माधव मुक्तिबोध	15

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. इस प्रश्नपत्र के अध्ययन द्वारा विद्यार्थी हिन्दी साहित्य के इतिहास के आधुनिककाल में लिखे काव्य, उसके लिये प्रेरक परिस्थितियों तथा उसकी प्रवृत्तियों से अवगत हो सकेंगे।
2. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य से आधुनिककालीन काव्य के अन्तर को जान सकेंगे तथा नवयुगीन चेतना एवं संवेदना को समझ सकेंगे।
3. भारतीय स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी साहित्य की भूमिका को जान सकेंगे।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखने को बाध्य हो।

सहायक ग्रंथः

1. कविता के नए प्रतिमान; डॉ. नामवर सिंह; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
2. आलोचक और आलोचना; बच्चन सिंह; नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
3. हिन्दी आलोचना का विकास; नंदकिशोर नवल; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. हिन्दी आलोचनाः शिखरों का साक्षात्कार; डॉ. रामचन्द्र तिवारी; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का साहित्य; डॉ. चौथीराम यादव, हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला।
6. तीसरा रुख; पुरुषोत्तम अग्रवाल; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।
7. नई कविता और अस्तित्ववाद; रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
8. हिन्दी आलोचना; विश्वनाथ त्रिपाठी; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
9. इतिहास और आलोचना; नामवर सिंह; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
10. दूसरी परंपरा की खोज; नामवर सिंह; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
11. हिन्दी आलोचना का विकास; मधुरेश; लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
12. रामचन्द्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना; रामविलास शर्मा; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
13. हिंदी के प्रहरी; रामविलास शर्मा, सं. विश्वनाथ त्रिपाठी; वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
14. आलोचना की सामाजिकता; मैनेजर पाण्डेय; वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
15. आलोचना और आलोचना; देवी शंकर अवस्थी; वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष		
द्वितीय सेमेस्टर		
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC412**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **आदिकालीन एवं मध्यकालीन प्रबन्ध–काव्य**	
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : कवियों द्वारा हिन्दी साहित्य के आदिकाल से ही उत्कृष्ट प्रबन्ध–काव्यों के सृजन की परम्परा चली आयी है। एक–से–एक श्रेष्ठ महाकाव्य हिन्दी में उपलब्ध हैं, जिन्होंने परवर्ती कवियों पर तो अपना प्रभाव डाला ही है, जनता को भी बड़े व्यापक स्तर पर प्रभावित और प्रेरित किया है। इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को आदिकाल से लेकर मध्यकाल तक लिखे गये हिन्दी के प्रसिद्ध प्रबन्ध–काव्यों और उनकी विशेषताओं से परिचित कराना है।		
क्रेडिट : **4**	पूर्णांक : **25+75=100**	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**
कुल व्याख्यान संख्या : 60		

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या
1.	चन्दवरदाई : **पृथ्वीराजरासो–रेवा तट (प्रारम्भिक 20 छन्द)** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : रासो काव्य–परम्परा और पृथ्वीराजरासो; पृथ्वीराजरासो की प्रामाणिकता; तत्कालीन परिवेश और पृथ्वीराजरासो; रासो का काव्य–सौष्ठव; रेवा तट का काव्य–वैशिष्ट्य।	15
2.	**मलिक मुहम्मद जायसी** **पद्मावत– नागमती वियोग वर्णन** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : सूफी काव्य–परम्परा और 'पद्मावत'; 'पद्मावत' में प्रेम–व्यंजना; 'पद्मावत' में लोक–तत्त्व; 'पद्मावत' का काव्य–सौष्ठव; पद्मावत के प्रतीकार्थ; नागमती वियोग–वर्णन का वैशिष्ट्य।	15
3.	**तुलसीदास** **श्रीरामचरितमानस**; गीता प्रेस, गोरखपुर **उत्तरकाण्ड** : दोहा संख्या– 21 से 41। **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– राम–काव्य–परम्परा और तुलसीदास; निर्गुण का स्वरूप तथा कबीर और तुलसी के राम में अन्तर; तुलसी का समन्वयवाद, भक्ति–भावना, लोक–मंगल; दार्शनिक सिद्धान्त तथा काव्यगत विशेषताएँ।	15
4.	**केशवदास :रामचन्द्रिका** **परशुराम–लक्ष्मण संवाद** (संक्षिप्त रामचन्द्रिका; सम्पादक–रामचन्द्र तिवारी; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी; पद सं. 52 से 99) **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– केशव का आचार्यत्व; राम–काव्य–परम्परा और 'रामचन्द्रिका'; काव्य–वैभव; संवाद–योजना।	15

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. प्राचीन एवं मध्यकालीन श्रेष्ठ प्रबन्ध–काव्यों को इस पत्र के अन्तर्गत चयनित किया गया है। इनके अध्ययन द्वारा विद्यार्थियों को प्रबन्ध–काव्यों के स्वरूप एवं महत्ता का परिज्ञान हो सकेगा।
2. मध्यकालीन जीवन की दिशा बदल देने के साथ ही समाज पर आज तक अपना प्रभाव बनाये हुए इन प्रबन्ध–काव्यों की विशेषताओं से विद्यार्थियों का परिचय हो सकेगा।
3. प्राचीन एवं मध्यकालीन जीवन–मूल्यों तथा काव्य–मूल्यों का भी विद्यार्थियों को ज्ञान हो सकेगा।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखें।

सहायक ग्रंथ :

1. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का आदिकाल; बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, पटना।
2. डॉ. नामवर सिंह, पृथ्वीराज रासो की भाषा; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
3. डॉ. सुमन राजे; चन्दवरदाई; प्रथम संस्करण–2005;उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
4. डॉ. प्रभाकर शुक्ल; मलिक मुहम्मद जायसी; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
5. रामलाल वर्मा, जायसी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली, 1979।
6. मुंशीलाल पाठक, मलिक मोहम्मद जायसी और उनका काव्य, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
7. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, मध्यकालीन धर्म साधना; साहित्य भवन, इलाहाबाद।
8. रामनरेश त्रिपाठी, तुलसीदास और उनकी कविता (भाग–1), हिन्दी मंदिर, प्रयाग, 1937।
9. राजपति दीक्षित, तुलसीदास और उनका युग, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 1953।
10. डॉ. भगवानशरण भारद्वाज (सम्पादक); तुलसी पंचशती स्मृति–पारिजात; योगक्षेम प्रकाशन, चित्रकूट, सिन्धुनगर, बरेली।
11. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
12. प्रो. हरीशकुमार शर्मा; तुलसी साहित्य का आधुनिक सन्दर्भ; प्रथम संस्करण–2012; साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली।

एम0. ए. (हिन्दी) प्रथम वर्ष

द्वितीय सेमेस्टर

पाठ्यक्रम कोड : **MHNC413**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **राष्ट्रीय चेतना का हिन्दी काव्य**

पाठ्यक्रम परिणाम (Course outcomes) :

साहित्य हमें हमारे जीवन–मूल्यों से जोड़ता है। राष्ट्रीयता एक बड़ा जीवन–मूल्य है। हिन्दी कविता प्राचीन काल से ही इससे जुड़ी रही है। इस प्रश्नपत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को विभिन्न कालों के ऐसे हिन्दी कवियों और उनके इस तरह के काव्य से परिचित कराना है जो राष्ट्रीय चेतना से अनुप्राणित हैं। इस तरह की कविताओं के अध्ययन से उनमें निश्चय ही राष्ट्रीयता की भावना और भी पुष्ट तथा प्रगाढ़ हो सकेगी और उनमें राष्ट्र के प्रति अनुराग जाग्रत होगा।

क्रेडिट **: 4**	पूर्णांक **: 25+75 =100**	उत्तीर्णांक **: 36%**

कुल व्याख्यान संख्या- 60

इकाई	विषयवस्तु	व्याख्यानों की संख्या
I	**क. मैथिलीशरण गुप्त :** शिक्षा की अवस्था (भारत भारती); मातृभूमि। **ख. जयशंकर प्रसाद** अरुण यह मधुमय देश हमारा; हिमालय के आँगन में; पेशोला की प्रतिध्वनि; हिमाद्रि तुग श्रृंग से। **ग. सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला :** वर दे वीणावादिनि वर दे; भारती वंदना (भारति जय विजय करे); जागो फिर एक बार–2	15
II	**क. महादेवी वर्मा** : पन्थ होने दो अपरिचित; जाग बेसुध जाग; जाग तुझको दूर जाना। **ख. माखनलाल चतुर्वेदी** : पुष्प की अभिलाषा; जवानी। **ग. सुभद्रा कुमारी चौहान**– वीरो का कैसा हो वसन्त; झाँसी की रानी।	15
III	**क. बालकृष्ण शर्मा नवीन** : कोटि–कोटि कण्ठों से निकली; विप्लव गान। **ख. रामधारी सिंह दिनकर** : अरुणोदय, हिमालय; कलम आज उनकी जय बोल। **ग. श्यामनारायण पाण्डेय** : चेतक की वीरता; राणा प्रताप की तलवार।	15
IV	**क. द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी** : उठो धरा के अमर सपूतो; वीर तुम बढ़े चलो। **ख. बंशीधर शुक्ल** : कदम–कदम बढ़ाए जा, सबेरा हुआ है। **ग. अटल बिहारी बाजपेयी** : कदम मिलाकर चलना होगा।	15

(आलोचना–बिंदु : कवियों का काव्य–सौष्ठव, कविताओं का अनुभूति पक्ष तथा काव्य–सौंदर्य।)

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. उदयनारायण तिवारी, वीर काव्य, भारती भण्डार, प्रयाग, प्रथम संस्करण, संवत 2005वि.
2. आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, वाणी वितान, वाराणसी, संवत 2010 वि.
3. ब्रजरत्न दास, भारतेंदु ग्रंथावली, वाराणसी
4. डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल, मैथिलीशरण गुप्त ग्रंथावली, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, सन 2008
5. विनोद शंकर व्यास (संपा.), प्रसाद और उनका साहित्य, विद्या भास्कर बुक डिपो, वाराणसी
6. नंददुलारे वाजपेयी, जयशंकर प्रसाद, लीडर प्रेस, इलाहाबाद
7. kavitakosh.org
8. epustakalay.com
9. ndl.iitkgp.ac.in (National digital library of India)

<table>
<tr><td colspan="6" align="center">एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष</td></tr>
<tr><td colspan="6" align="center">द्वितीय सेमेस्टर</td></tr>
<tr><td colspan="3" align="center">पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :
MHNC414</td><td colspan="3" align="center">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
पाश्चात्य काव्यशास्त्र</td></tr>
<tr><td colspan="6">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
भारतीय काव्यशास्त्र की ही भांति पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा भी अत्यन्त समृद्ध है। आधुनिक साहित्य का सम्यक् अध्ययन बिना पाश्चात्य काव्यशास्त्र के समुचित ज्ञान के नहीं हो सकता। अतः इस पत्र में पाश्चात्य काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धान्त, सिद्धान्तकार तथा महत्वपूर्ण मान्यताओं को सम्मिलित किया गया है।</td></tr>
<tr><td colspan="2">क्रेडिट : 4</td><td colspan="2">पूर्णांक :
25+75=100</td><td colspan="2">उत्तीर्णांक : 36 प्रतिशत</td></tr>
<tr><td colspan="6" align="center">कुल व्याख्यान संख्या : 60</td></tr>
<tr><td>इकाई</td><td colspan="4" align="center">पाठ्यवस्तु</td><td>व्याख्यान संख्या</td></tr>
<tr><td>1.</td><td colspan="4">प्लेटो के काव्य–सिद्धांत।
अरस्तू की काव्य–विषयक मान्यताएं– अनुकरण, विरेचन और त्रासदी।
लोंजइनस– उदात्त तत्व।
क्रोचे– अभिव्यंजनावाद।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>2.</td><td colspan="4">आई. ए. रिचर्डस– सम्प्रेषण सिद्धान्त; मूल्य सिद्धांत तथा काव्य भाषा सिद्धान्त।
टी. एस. इलियट– परम्परा की अवधारणा; निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत।
कॉलरिज– कल्पना और फैंटेसी सिद्धान्त।
वर्ड्सवर्थ– काव्यभाषा सिद्धान्त।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>3.</td><td colspan="4">मैथ्यू ऑर्नल्ड के साहित्य सिद्धान्त।
पाश्चात्य आलोचना के कतिपय उपकरण :
मिथक; फन्तासी; कल्पना; प्रतीक और बिम्ब; बिम्ब–प्रतीकवाद।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>4.</td><td colspan="4">विविध साहित्यिक वाद :
आदर्शवाद; यथार्थवाद; मनोविश्लेषणवाद; स्वच्छन्दतावाद; अस्तित्ववाद; संरचनावाद एवं उत्तर–संरचनावाद; रूसी रूपवाद, नयी समीक्षा मिथक।</td><td>15</td></tr>
</table>

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी पाश्चात्य काव्यशास्त्र की प्रमुख अवधारणाओं को जान सकेंगे।
2. भारतीय के साथ–साथ पाश्चात्य काव्यशास्त्र के अध्ययन से काव्यशास्त्र की एक सम्यक् समझ उनमें विकसित हो सकेगी।
3. आधुनिक साहित्य के अध्ययन एवं समीक्षा हेतु इस पत्र का अध्ययन सहायक सिद्ध होगा।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखने को बाध्य हो।

सहायक ग्रन्थ :

1. डॉ. उदयशंकर श्रीवास्तव; पाश्चात्य समीक्षा के चार सूत्रधार; शिल्पायन प्रकाशन, दिल्ली।
2. डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय; पाश्चात्य काव्य चिन्तन; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

3. निर्मला जैन; पाश्चात्य साहित्य चिन्तन; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्लीं
4. रामचन्द्र तिवारी; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. गणपतिचन्द्र गुप्त; भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
6. राजनाथ शर्मा; पाश्चात्य काव्यशास्त्र : नयी प्रवृत्तियां; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।

<table>
<tr><td colspan="3">एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष</td></tr>
<tr><td colspan="3">द्वितीय सेमेस्टर</td></tr>
<tr><td>पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :
MHNP415</td><td colspan="2">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
हिन्दी शोध परियोजना</td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों में शोध एवं सृजनात्मक क्षमता का विकास करना है। उच्च शिक्षा का महत् उद्देश्य शोध है। किसी विषय पर शोध परियोजना करने से विद्यार्थियों में शोध–क्षमता का विकास हो और वे आगे चलकर एक अच्छे शोधकर्ता बन सकें, इस दृष्टि से इस पत्र की आयोजना पाठ्यक्रम में की गयी है।</td></tr>
<tr><td>क्रेडिट : 4</td><td>पूर्णांक : 100</td><td>उत्तीर्णांक : 36 प्रतिशत</td></tr>
<tr><td colspan="3">कुल व्याख्यान संख्या : 60</td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यवस्तु</td></tr>
<tr><td colspan="3">इस पत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी किसी शिक्षक के निर्देशन में हिन्दी भाषा एवं साहित्य से जुड़े किसी विषय का चयन कर एक शोध परियोजना पर कार्य करेंगे और उस कार्य के आधार पर एक शोध–प्रबन्ध तैयार करेंगे। शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन आन्तरिक एवं बाह्य परीक्षक द्वारा किया जायेगा और विद्यार्थियों की मौखिक परीक्षा भी ली जायेगी।</td></tr>
</table>

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थियों को शोध का व्यवहारिक अभ्यास होगा।
2. पीएच.डी. करने से पूर्व विद्यार्थी शोध की सही प्रविधि जान सकेगे और शोध कार्य की बारीकियों को समझकर उसमें दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी के एक गम्भीर अध्येता तथा उत्कृष्ट शोधार्थी के रूप में विकसित होने में यह पत्र सहायक होगा।

<table>
<tr><td colspan="4" align="center">एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष</td></tr>
<tr><td colspan="4" align="center">द्वितीय सेमेस्टर</td></tr>
<tr><td colspan="2" align="center">पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :
MHNO415 (क)</td><td colspan="2" align="center">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
भाषा विज्ञान तथा देवनागरी लिपि</td></tr>
<tr><td colspan="4"> पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : भारतीय काव्यशास्त्र की ही भांति पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा भी अत्यन्त समृद्ध है। आधुनिक साहित्य का सम्यक् अध्ययन बिना पाश्चात्य काव्यशास्त्र के समुचित ज्ञान के नहीं हो सकता। अतः इस पत्र में पाश्चात्य काव्यशास्त्र के प्रमुख सिद्धान्त, सिद्धान्तकार तथा महत्वपूर्ण मान्यताओं को सम्मिलित किया गया है।</td></tr>
<tr><td colspan="2">क्रेडिट : 4</td><td>पूर्णांक :
25+75=100</td><td>उत्तीर्णांक : 36 प्रतिशत</td></tr>
<tr><td colspan="4" align="center">कुल व्याख्यान संख्या : 60</td></tr>
<tr><td>इकाई</td><td colspan="2" align="center">पाठ्यवस्तु</td><td>व्याख्यान संख्या</td></tr>
<tr><td>1.</td><td colspan="2">भाषा विज्ञानः
भाषा विज्ञान : अभिप्राय एवं वैशिष्ट्य; भाषा विज्ञान के अंग तथा प्रयोजन; भाषा–विज्ञान की शाखाएं– वर्णनात्मक, ऐतिहासिक और तुलनात्मक; भाषा विज्ञान का ज्ञान की अन्य शाखाओंसेसम्बन्ध; भाषा विज्ञान का संक्षिप्त इतिहास।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>2.</td><td colspan="2">ध्वनि–विज्ञान और रूप–विज्ञान :
हिन्दी ध्वनियों का वर्गीकरण– स्वर और व्यंजन; ध्वनियों के गुण एवं नियम; स्वनिम की व्यवहारिक उपयोगिता तथा विशेषताएं; ध्वनि–परिवर्तन के कारण; ध्वनि–परिवर्तन कीदिशाएं।
रूप–विज्ञान : रूपिम की अवधारणा; रूपिम के प्रकार; शब्द और पद में अन्तर; पद–सम्बन्धी रूप–परिवर्तन के कारण।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>3.</td><td colspan="2">वाक्य–विज्ञान और अर्थ विज्ञान :
वाक्य–विज्ञान : वाक्य–विज्ञान की परिभाषा; वाक्य की आवश्यकताएं; वाक्य के अंग; वाक्यों के प्रकार; वाक्य रचना में परिवर्तन के कारण।
अर्थ–विज्ञान : अर्थ की प्रतीति; शब्द और अर्थ का सम्बन्ध; अर्थबोध के साधन; अर्थ–परिवर्तन की दिशाएं; अर्थपरिवर्तन के कारण।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>4.</td><td colspan="2">हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपि :
हिन्दी भाषा का विकास; हिन्दी की बोलियों का परिचय (पूर्वी एवं पश्चिमी हिन्दी के विशेष संदर्भ में)।
भारत में लिपियों का विकास; देवनागरी लिपि का सामान्य परिचय; विशेषताएं; सुधार के प्रयत्न तथा देवनागरी लिपि का मानकीकरण।</td><td>15</td></tr>
</table>

1. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, भाषाविज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज नयी दिल्ली, 1972
2. कपिलदेव द्विवेदी, भाषा–विज्ञान एवं भाषा–शास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1980
3. डॉ. रामकिशोर शर्मा, हिन्दी भाषा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, विद्या प्रकाशन, इलाहाबाद, 1994
4. भोलानाथ तिवारी, हिंदी भाषा का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,2014
5. सत्यनारायण त्रिपाठी, हिंदी भाषा और लिपि का ऐतिहासिक विकास, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 1981

6. राजमणि शर्मा, हिंदी भाषा : इतिहास एवं स्वरूप, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014
7. भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, किताबमहल, इलाहाबाद, 1999
8. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी भाषा और लिपि, हिन्दुस्तानी अकेडमी, प्रयाग, 1951
9. हरदेव बाहरी, हिन्दी : उद्भव, विकास और रूप, किताबमहल, इलाहाबाद, 42 वाँ संस्करण, 2018

एम. ए. हिन्दी, प्रथम वर्ष

द्वितीय सेमेस्टर

पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
MHNE415 (ख)	**प्रवासी हिन्दी साहित्य**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :

भारत से बाहर विदेशों में रहने वाले भारतवंशियों की एक बड़ी संख्या हिन्दी में रचनारत है। उनकी रचनाएं हिन्दी साहित्य को एक अलग आयाम देती हैं। जड़ों से बिछड़ने की पीड़ा, देश से बाहर रहते हुए भी देश से जुड़े रहने की ललक, दूर देश में होने वाली समस्याएं, नयी पीढ़ी में आ रहे बदलाव आदि प्रवासी साहित्य में अभिव्यंजित होते दिखते हैं। हिन्दी के विद्यार्थी प्रवासी साहित्य से भी परिचित हो सकें, इस उद्देश्य से इस पत्र की रचना की गयी है।

क्रेडिट : **5**	पूर्णांक : **25+75=100**	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**

कुल व्याख्यान संख्या : 60

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या
1.	प्रवासी : अर्थ एवं क्षेत्र; प्रवासी साहित्य : अवधारणा और प्रकार; प्रवासी हिन्दी साहित्य का इतिहास; प्रवासी हिंदी साहित्यकारों का हिन्दी के विकास में योगदान– उपन्यास, कहानी तथा कविता के विशेष सन्दर्भ में ।	15
2.	**काव्य :** वह अनजान प्रवासी– अभिमन्यु अनत परिन्दा याद का; फिजा का रंग (गजलें)– उषाराजे सक्सेना आपकी पितृ–छाया; मां : एक याद– दीपिका जोशी संध्या कोटि–कोटि दीप जले; शिवास्ते पंथानः सन्तु– अश्विन गांधी तुम लन्दन आना चाहते हो; एक स्वप्न– निखिल कौशिक चलो आज हम दीप जलायें– सुरेन्द्रनाथ तिवारी	15
3.	**उपन्यास :** **लौटना**– सुषम बेदी, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली **आलोचना के बिन्दु :** सुषम बेदी की उपन्यास कला, पठित उपन्यास का सारांश, उपन्यास की समीक्षा, प्रतिपाद्य ।	15
4.	**कहानियां :** तेजेन्द्र शर्मा– कोख का किराया जकिया जुबेरी– सांकल जय वर्मा– गुलमोहर सुधा ओम ढींगरा– कौन सी जमीन अपनी पूर्णिमा बर्मन– यों ही चलते हुए **आलोचना के बिन्दु :** पठित कहानियों का सारांश, वैशिष्ट्य, एवं समीक्षा।	15

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी दूर देशों में बैठे हुए प्रवासी भारतीयों की संवेदना से तारतम्य बैठा सकेंगे।
2. हिन्दी साहित्य के विस्तृत संसार से परिचित हो सकेंगे।
3. प्रवासी हिन्दी साहित्यकारों के हिन्दी साहित्य के विकास में योगदान से अवगत हो सकेंगे।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखें।

सहायक ग्रंथ :

1. प्रवासी भारतीय हिंदी साहित्य; सं. विमलेश कांति वर्मा
2. प्रवासी हिंदी साहित्य : दशा और दिशा; प्रो. प्रदीप श्रीधर
3. प्रवासी हिंदी साहित्य : विविध आयाम; डॉ. रमा
4. हिंदी का प्रवासी साहित्य; डॉ. कमलकिशोर गोयनका
5. प्रवासी लेखन : नई जमीन, नयाँ आसमान; अनिल जोशी
6. प्रवासी भारतीयों में हिंदी की कहानियाँ: डॉ. सुरेंद्र गंभीर
7. प्रवासी श्रम इतिहास; धनंजय सिंह
8. प्रवास में; डॉ. उषाराजे सक्सेना
9. प्रवासी साहित्यकार मूल्यांकन, श्रृंखला–1; तेजेंद्र शर्मा, सं. डॉ. रमा, महेंद्र प्रजापति
10. प्रवासी साहित्य : भाव और विचार, संध्या गर्ग
11. हिंदी प्रवासी साहित्य (गद्य साहित्य);डॉ. कमलकिशोर गोयनका
12. प्रवासी की कलम से; बादल सरकार

एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष		
तृतीय सेमेस्टर		
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNC501**	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **विविध गद्य विधाएँ**	
पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) : नाटक, कहानी एवं उपन्यास जैसी विधाओं के अतिरिक्त आधुनिक काल में अनेक गद्य विधाएं अस्तित्व में आयी हैं। इनमें से कतिपय प्रमुख गद्य विधाओं से विद्यार्थियों को परिचित कराना तथा उनके प्रति आलोचनात्मक विवेक के साथ अध्ययन की दृष्टि उत्पन्न करना ही इस पत्र का उद्देश्य है।		
क्रेडिट : **4**	पूर्णांक : **25+75=100**	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**
कुल व्याख्यान संख्या : **60**		

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या
1.	**आत्मकथा :** मन्नू भण्डारी–**एक कहानी यह भी** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**–हिन्दी आत्मकथा का स्वरूप और 'एक कहानी यह भी'; 'एक कहानी यह भी' में मन्नू भण्डारी का व्यक्तित्व; स्त्री–विमर्श का परिप्रेक्ष्य और मन्नू भण्डारी की आत्मकथा; 'एक कहानी यह भी' की शिल्प–संरचना।	15
2.	**जीवनी :** शिवरानी देवी–**प्रेमचन्द घर में** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**–हिन्दी जीवनी साहित्य और 'प्रेमचन्द घर में'; 'प्रेमचन्द घर में' जीवनी के आधार पर प्रेमचन्द का व्यक्तित्व और कृतित्व; जीवनी के तत्त्वों के आधार पर 'प्रेमचन्द घर में' की समीक्षा; 'प्रेमचन्द घर में' की भाषा–शैली।	15
3.	**निबन्ध :** भारतेन्दु हरिश्चन्द्र–**भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है** बालमुकुन्द गुप्त–**एक दुराशा** रामचन्द्र शुक्ल–**कविता क्या है** राजेन्द्र प्रसाद–**शिक्षा और संस्कृति** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**–निबन्धों का प्रतिपाद्य एवं समीक्षा; निबन्धकारों की निबन्ध–कला।	15
4.	**ललित निबन्ध :** हजारी प्रसाद द्विवेदी–**नाखून क्यों बढ़ते हैं** कुबेरनाथ राय–**उत्तराफाल्गुनी के आस–पास** विवेकी राय–**उठ जाग मुसाफिर** **आलोचना के प्रमुख बिन्दु**– निबन्धों का प्रतिपाद्य एवं समीक्षा; निबन्धकारों की निबन्ध–कला।	15

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. कथेतर गद्य साहित्य का विद्यार्थियों को ज्ञान हो सकेगा।
2. गद्य की विविध विधाओं से अवगत होकर साहित्य–सृजन के विविध आयामों को विद्यार्थी जान–समझ सकेंगे।

3. उनके भीतर साहित्य–सृजन की प्रेरणा और क्षमता जाग्रत हो सकेगी।
4. गद्य साहित्य के अध्ययन का आलोचनात्मक विवेक उत्पन्न हागा।

सहायक ग्रंथ :

1. रामचन्द्र तिवारी; हिन्दी का गद्य साहित्य; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
2. रामचन्द्र तिवारी; हिन्दी गद्य; प्रकृति और रचना सन्दर्भ; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
3. रामस्वरूप चतुर्वेदी, हिन्दी : विन्यास और विकास; लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
4. वेदवती राठी, हिन्दी ललित निबन्ध : स्वरूप विवेचन; लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
5. विजयमोहन सिंह, आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य का विकास और विश्लेषण; ज्ञानपीठ प्रकाशन, दिल्ली।
6. नामवर सिंह, हिन्दी का गद्य पर्व; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
7. चौकीराम मिश्र, हजारीप्रसाद द्विवेदी : समग्र पुनरावलोकन; लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली।
8. डॉ. भगवानशरण भारद्वाज, हिन्दी जीवनी साहित्य : सिद्धान्त और अध्ययन; परिमल प्रकाशन, इलाहाबाद।

<table>
<tr><td colspan="3" align="center">एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष</td></tr>
<tr><td colspan="3" align="center">तृतीय सेमेस्टर</td></tr>
<tr><td align="center">पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :
MHNC502</td><td colspan="2" align="center">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
आधुनिक काव्य</td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
छायावाद आधुनिक हिन्दी कविता का एक बहुत महत्त्वपूर्ण चरण है। द्विवेदीयुग के आगे काव्यभाषा के रूप में खड़ी बोली के सामर्थ्य की पहचान कराने और उसे अनुरूप प्रतिष्ठा दिलाने में छायावादी कवियों की बड़ी भूमिका है। अतः दो प्रतिनिधि द्विवेदीयुगीन कवियों के साथ ही आधुनिक हिन्दी कविता के स्वर्ण युग कहे जाने वाले छायावाद युग के स्तम्भ माने जाने वाले चारों प्रसिद्ध कवियों की कविताओं से हिन्दी के विद्यार्थियों को परिचित कराना ही इस पत्र का उद्देश्य है।</td></tr>
<tr><td>क्रेडिट : 4</td><td>पूर्णांक :
25+75=100</td><td>उत्तीर्णांक : 36 प्रतिशत</td></tr>
<tr><td colspan="3" align="center">कुल व्याख्यान संख्या : 60</td></tr>
</table>

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या
1.	**मैथिलीशरण गुप्त–साकेत** पाठांश– **नवम् सर्ग** से चयनित अंश। वेदने तू भी भली बनी; दोनों ओर प्रेम पलता है; निरख सखी ये खंजन आये; शिशिर न फिर गिरि वन में; मुझे फूल मत मारो; यही आता है इस मन में। **आलोचना के बिन्दु** : हरिऔध की काव्य–कला; प्रिय प्रवास का महत्त्व; प्रिय प्रवास की राधा; आधुनिक हिन्दी कविता को गुप्त जी का अवदान; मैथिलीशरण गुप्त का काव्य–सौष्ठव; साकेत के नवम् सर्ग की विशेषताएं; उर्मिला का विरह–वर्णन।	15
2.	**जयशंकर प्रसाद–कामायनी** पाठांश– **लज्जा सर्ग** **आलोचना के बिन्दु** : प्रसाद के काव्य में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना; आधुनिक युग के महाकाव्य के रूप में 'कामायनी' ('कामायनी' का प्रबन्ध–विन्यास); कामायनी में प्रसाद का जीवन–दर्शन एवं सौन्दर्य–दृष्टि; कामायनी में समरसता और आनन्दवाद; कामायनी में रूपक तत्त्व; कामायनी का आधुनिक सन्दर्भ और विश्व–दृष्टि।	15
3.	**सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'– राम की शक्ति–पूजा** **आलोचना के बिन्दु** : हिन्दी कविता को निराला की देन; निराला की काव्यगत विशेषताएं; निराला की प्रगति–चेतना और प्रयोग के विविध आयाम; निराला की लम्बी कविताएं; 'राम की शक्ति–पूजा' का प्रतिपाद्य एवं महत्त्व; निराला के काव्य में राष्ट्रीय चेतना।	15
4.	**सुमित्रानंदन पंत–पल्लव** **पाठ्य कविताएं–** प्रथम रश्मि; परिवर्तन; मौन–निमन्त्रण; द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र। **आलोचना के बिन्दु** : पन्त जी की काव्ययात्रा; पन्त और छायावाद; पन्त का प्रकृति–चित्रण; पन्त जी का काव्य–सौन्दर्य; पन्त–काव्य में कल्पना; पन्त जी की काव्य–भाषा; पठित कविताओं का प्रतिपाद्य।	15

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. आधुनिककालीन हिन्दी कविता विशेषकर खड़ी बोली की कविता से विद्यार्थियों का परिचय हो सकेगा।
2. सामयिक परिस्थितियों में आधुनिक हिन्दी कविता की प्रभावकारी भूमिका को वे जान सकेगे।
3. हिन्दी कविता की सामर्थ्य से अवगत होकर वे उस पर गर्व कर सकेगे।
4. विद्यार्थियों में काव्य–समीक्षा का विवेक विकसित होगा और वे आधुनिक मानदण्डों पर काव्य की परख करना सीख सकेगे।
5. सृजनात्मक क्षमता वाले विद्यार्थियों में काव्य–सृजन की दृष्टि विकसित हो सकेगी।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखें।

सहायक ग्रन्थ :

1. साकेत : एक अध्ययन; डॉ. नगेन्द्र, राजकमल प्रकाशन, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
2. साकेत के नवम सर्ग का काव्य वैभव; कन्हैयालाल सहल, हिन्दी बुक सेन्टर, दिल्ली।
3. हरिऔध के महाकाव्यों की नारी पात्र; रेणु श्रीवास्तव, अमन प्रकाशन, कानपुर।
4. हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि; द्वारिकाप्रसाद सक्सेना; विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
5. जयशंकर प्रसाद : वस्तु और कला; डॉ. रामेश्वर खण्डेलवाल
6. प्रसाद का काव्य; डॉ. प्रेमशंकर; वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
7. निराला की साहित्य साधना, भाग–1, 2, 3; डॉ. रामविलास शर्मा
8. निराला : एक आत्महन्ता आस्था; दूधनाथ सिंह; लोक भारती, इलाहाबाद।
9. छायावाद; डॉ. नामवर सिंह; राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
10. क्रांतिकारी कवि निराला; डॉ. बच्चन सिंह;
11. कामायनी अनुशीलन; रामलाल सिंह, वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
12. राम की शक्तिपूजा; डॉ. नगेन्द्र; नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली।
13. महादेवी का काव्य सौष्ठव; कुमार विमल; अनुपम प्रकाशन, पटना।
14. महादेवी; दूधनाथ सिंह; राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद।
15. कवि सुमित्रानंदन पंत; नंद दुलारे वाजपेयी; प्रकाशन संस्थान, दिल्ली।
16. सुमित्रानंदन पंत : कवि और काव्य; शारदालाल प्रकाशन, दिल्ली।
17. महादेवी; इन्द्रनाथ मदान; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली।

<table>
<tr><td colspan="3">एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष
तृतीय सेमेस्टर</td></tr>
<tr><td colspan="1">पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :
MHNE503 (क)</td><td colspan="2">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
प्रयोजनमूलक हिन्दी</td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
हिन्दी भाषा का उपयोग अब केवल साहित्य–सृजन तक सीमित नहीं है। राजभाषा के रूप में भी उसकी महत्त्वपूर्ण भूमिका है। वह रोजगार देने वाली भाषा भी है। विभिन्न कार्यालयी कार्यों, जनसंचार माध्यमों, अनुवाद–कार्य आदि दृष्टियों से उसका उपयोग होता है। विद्यार्थियों में कार्यालयी कार्यों तथा अन्य व्यवसायिक उपयोग हेतु दक्षता–विकास की दृष्टि से इस प्रश्नपत्र का निर्धारण किया गया है।</td></tr>
<tr><td>क्रेडिट : 4</td><td>पूर्णांक :
25+75=100</td><td>उत्तीर्णांक : 36 प्रतिशत</td></tr>
<tr><td colspan="3">कुल व्याख्यान संख्या : 60</td></tr>
</table>

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या
1.	**हिन्दी की प्रयोजनीयता :** प्रयोजनमूलक हिन्दी की अवधारणा एवं विशेषताएं; प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप तथा प्रयुक्तियां; **कार्यालयी हिन्दी के प्रमुख प्रकार्य–** संक्षेपण, प्रारूपण, टिप्पणी, प्रतिवेदन, ज्ञापन, मसौदा, अनुस्मारक, अधिसूचना, पृष्ठांकन तथा पत्र–लेखन।	15
2.	**अनुवाद** : अनुवाद का अर्थ एवं क्षेत्र; अनुवाद की पद्धतियां; अनुवाद के प्रकार; अनुवाद एवं अनुवादक की कसौटी; अनुवाद की चुनौतियां; अनुवाद की भूमिका; अनुवाद एवं आशु अनुवाद; अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के अवसर।	15
3.	**पारिभाषिक पदावली** : वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित 'प्रशासनिक शब्दावली' से 200 पारिभाषिक वाक्यांश और अभिव्यक्तियां। (सूची संलग्न)	15
4.	**प्रयोजनमूलक हिन्दी और कम्प्यूटर :** कम्प्यूटर का सामान्य परिचय तथा उपयोगिता; हिन्दी कम्प्यूटिंग; इण्टरनेट की कार्यप्रणाली तथा लाभ; इण्टरनेट के उपयोग– ई–मेल करना तथा खोलना; ई–सामग्री का उपयोग और प्रयोग; वेब–पेज बनाना, वेबसाइट–निर्माण, वेब–पोर्टल बनाना; वेब–सामग्री–संग्रह; वेब–लेखन; वेब–पत्रकारिता; प्रमुख वेब–शब्दावली।	15

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी विभिन्न माध्यमों और रूपों में हिन्दी की उपयोगिता को समझ सकेंगे।
2. विद्यार्थियों में भाषिक कौशल का विकास होगा जो उन्हें रोजगार–क्षम बनाने में सहायक होगा।
3. विद्यार्थी हिन्दी में कम्प्यूटर के अनुप्रयोग जानकर अपनी क्षमता को और बढ़ा सकेंगे।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखने को बाध्य हो।

पाठ्यक्रम में निर्धारित पारिभाषिक वाक्यांशों की सूची

1	Acceptance in principle	सिद्धांत रूप से स्वीकृति
2	Acceptance is awaited	स्वीकृति की प्रतीक्षा है
3	Accepted on trial basis	परीक्षण के आधार पर स्वीकृत
4	According to the rules in vogue	प्रचलित नियमों के अनुसार
5	Acknowledgement has already been sent	पावती पहले ही भेजी जा चुकी है
6	Acknowledgment is awaited	पावती की प्रतीक्षा है
7	Admit an appeal	अपील स्वीकार करें
8	Action as at 'A' above	ऊपर 'क' के अनुसार कार्रवाई की जाए
9	Action at once please	कृपया फौरन कार्रवाई करें
10	Action has already been taken in the matter	इस मामले में कार्रवाई पहले की जा चुकी है
11	Action has not yet been initiated	कार्रवाई अभी शुरू नहीं की गई है
12	Action is required to be taken early	शीघ्र कार्रवाई अपेक्षित है
13	Action is underway	कार्रवाई की जा रही है
14	Action may be taken as accordingly	तद्नुसार कार्रवाई की जाए
15	Action may be taken as proposed act of honour	यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए मानार्थ स्वीकृति, मानार्थ सकार
16	Address all concerned	सर्वसंबंधित को लिखा जाए
17	Administrative approval may be obtained	प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए
18	Admission with permission	अनुमति लेकर भीतर आएं, अनुमति ले कर अंदर जाएं
19	Admit an appeal	अपील स्वीकार करें
20	Advance for purchase of stationery may be sanctioned	लेखन–सामग्री की खरीद के लिए अग्रिम मंजूर किया जाय
21	Advance of T.A. may please be arranged	कृपया यात्रा भत्ते के अग्रिम का प्रबंध करें
22	After adequate consideration	समुचित विचार के बाद
23	After taking into consideration all aspects of the issue	मामले के सभी पहलुओं पर विचार करने के बाद
24	Agreed to	सहमति दी जाती है
25	A list is placed below	सूची नीचे रख दी है
26	All concerned should note	सभी संबंधित नोट करें
27	Allotment from the quota reserved	आरक्षित कोटे से आबंटन
28	Allow the benefit of counting former service to	पिछली सेवा–अवधि का लाभ देना
29	Appear for interview	साक्षात्कार के लिए उपस्थित हों
30	Application has not been made in proper from	आवेदन उचित रूप में नहीं किया गया है
31	Approval may be accorded	अनुमोदन प्रदान कर दिया जाए
32	Approved as per remarks in the margin	हाशिए की अभ्युक्ति के अनुसार अनुमोदित
33	Approved draft typed and put up for	अनुमोदित प्रारूप टाइप करके हस्ताक्षर के लिए प्रस्तुत

	signatures please	
34	Approved subject to the objection in para 2 above	ऊपर पैरा 2 में उल्लिखित आपत्तियों के अधीन अनुमोदित
35	Arrangements are being made to ensure timely submission of report	रिपोर्ट समय पर प्रस्तुत करने की व्यवस्था की जा रही है
36	Arrear report has not been received	बकाया काम की रिपोर्ट अभी मिली नहीं है
37	As above	उर्पयुक्त के अनुसार
38	As already pointed out	जैसा कि पहले बताया जा चुका है
39	As a matter of right	अधिकार के रूप में, साधिकार
40	As an exceptional case	अपवाद के रूप में
41	As far as may be	यशाशक्य, जहां तक हो सके
42	As far as permissible	जहां तक अनुज्ञेय हो
43	As hereinafter provided	जैसा इसके पश्चात् उपबंधित है
44	As in force for the time being	जैसा कि फिलहाल लागू है
45	As it involves legal complications, opinion of law officer may be sought for in the matter	मामले में कानूनी जटिलताएं है, इसलिए विधि अधिकारी की राय ली जाए
46	As may be considered expedient	जैसा कि समीचीन प्रतीत हो
47	As may be specified	जैसा विनिर्दिष्ट किया जाए, यथा विनिर्दिष्ट
48	As regards the particular matter in question	जहां तक विचाराधीन मामले का संबंध है
49	As required under the rules	जैसा कि नियमों के अधीन अपेक्षित है/हो
50	Attention is invited	की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है
51	Ban on creation of posts	पदों के सृजन पर रोक
52	Ban on future promotion	भावी पदोन्नति पर रोक
53	Before the effective date of govt. Order	सरकारी आदेश की प्रभावी तारीख से पूर्व
54	Bills for signature, please	बिल हस्ताक्षरार्थ प्रस्तुत, कृपया बिलों पर हस्ताक्षर कर दें
55	Call upon to show cause	कारण बताने को कहा जाए
56	Case has been closed	मामला समाप्त/बंद कर दिया गया है
57	Case is resubmitted as directed on pre-page	पूर्व–पृष्ठ पर निदेशानुसार मामला पुनः प्रस्तुत है
58	Cases for disposal	निपटान के लिए मामले
59	Ceased to be payable	देयता की समाप्ति हो गई
60	Circulate and then file	सम्बद्ध व्यक्तियों को दिखाकर फाइल करें
61	Claim is time-barred	दावा कालातीत है, दावा कालवर्जित है
62	Competent authority's sanction is necessary	सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी आवश्यक है
63	Compliance with orders is still awaited	आदेशों के अनुपालन की अभी भी प्रतीक्षा है
64	Concurrence of the finance branch is necessary	वित्त शाखा की सहमति आवश्यक है
65	Consolidated report may be furnished	समेकित रिर्पार्ट प्रस्तुत की जाए
66	Consumption ceiling	अधिकतम उपभोग सीमा
67	Copy enclosed for ready reference	तत्काल संदर्भ के लिए प्रतिलिपि संलग्न
68	Copy for forwarded for information/	सूचना/आवश्यक कार्रवाई के लिए प्रतिलिपि

	necessary action	अग्रेषित
69	Copy of the letter referred to above is sent herewith	उपर्युक्त पत्र की प्रतिलिपि इसके साथ भेजी जा रही है
70	Delay should be a avoided	विलंब न होने दें, देर नहीं होनी चाहिए
71	Discrepancy may be reconciled	विसंगति का समाधान कर लिया जाए
72	Disregarding the facts	तथ्यों की उपेक्षा करते हुए
73	Do the needful	आवश्यक कार्रवाई करें
74	Draft, as amended, may be issued	यथासंशोधित मसौदा/प्रारूप जारी किया जाए
75	Draft as amended is put up	यथासंशोधित प्रारूप प्रस्तुत है
76	Draft reply is put up for approval	उत्तर का प्रारूप अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है
77	Due to dislocation of traffic	यातायात के अव्यस्थित होने के कारण
78	Duly complied with	विधिवत् पालन किया गया
79	Duly sanctioned	विधिवत् मंजूर किया हुआ
80	Early action in the matter is requsted	अनुरोध है कि इस मामले में शीध्र कार्रवाई करें
81	Early orders are solicited	शीध्र आदेश देने की कृपा करें
82	Effective steps should be taken to clear the arrears	बकाया काम के निपटारे के लिए कारगार उपाय किए जाएं
83	Employee requests that	कार्मचारी ने अनुरोध किया है कि
84	Examine the proposal in the light of observation at ‘A’ above	ऊपर ''क'' में की गई टिप्पणी को ध्यान में रखते हुए प्रस्ताव की जांच करें
85	Exigencies of administrative work	प्रशासनिक कार्य की तात्कालिक आवश्यकताएं
86	Ex parte judgment	एकपक्षीय निर्णय
87	Expedite in your letter	आपके पत्र में स्पष्ट किया गया
88	Expedite action	कार्रवाई शीघ्र करें, कार्रवाई में शीघ्रता करें
89	Expedite submission of report	रिर्पाट शीघ्र प्रस्तुत करने की व्यवस्था करें
90	Experimental basis	प्रयोगात्मक आधार
91	Explanation from the defaulter may be obtained	चूककर्ता से जवाब तलब किया जाए
92	Explanation may be called for	स्पष्टीकरण मांगा जाए
93	Ex-post facto sanction	कार्योत्तर मंजूरी, कार्योत्तर संस्वीकृति
94	Extension of leave	छुट्टी बढ़ाना
95	Facilities are not available	सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं
96	Facts of the case in brief are as follows	संक्षेप में मामले के तथ्य इस प्रकार हैं:
97	Figures for the corresponding period of the last year are not readily available	तद्नुरूप अवधि के पिछले वर्ष के आंकड़े तत्काल उपलब्ध नहीं हैं
98	Final concurrence is accorded	अंतिम सहमति दी जाती है
99	Fix a date for the meeting	बैठक की तारीख नियत की जाए
100	Following employees are confirmed in their existing posts with effect from….	निम्नलिखित कर्मचारी अपने वर्तमान पद पर तारीख….. से स्थायी किए जाते हैं
101	Following transfers and postings will take	निम्नलिखित स्थानांतरण और तैनातियां तत्काल प्रभावी होंगीं

	effect immediately	
102	For and on behalf of	के लिए और..... की ओर से
103	For approval	अनुमोदनार्थ, अनुमोदन के लिए
104	For favour of doing the needful	आवश्यक कार्रवाई करने की कृपा करें
105	For orders	आदेशार्थ
106	For further action	आगे की कार्रवाई के लिए
107	Fully paid up	पूर्णतः भुगतान कर दिया है
108	Funds are available within sanctioned budget	मंजूर बजट में निधि उपलब्ध है
109	Funds not available	निधि उपलब्ध नहीं है
110		
111	Further communication will follow	आगे फिर लिखा जाएगा
112	Further orders will follow	आगे और आदेश भेजे जाएंगे
113	Get clarification of the staff concerned	संबंधित कर्मचारियों से स्पष्टीकरण मांगा जाए
114	Give effect to	कार्यान्वित करें
115	Give top priority to this work	इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दें
116	Gradation of confidential reports	गोपनीय रिपोर्टों का श्रेणीकरण
117	Has been dealt with suitably	समुचित कार्रवाई की गई है
118	Has represented that his pay may be fixed in accordance with new rules	......ने अभ्यावेदन दिया है कि उनका वेतन नए नियमों के अनुसार नियत किया जाए
119	Having regard to	ध्यान में रखते हुए, ध्यान में रखकर
120	His request be acceded to	उसकी प्रार्थना स्वीकार की जाए
121	His request is in order	उनका अनुरोध नियमानुसार है
122	I am desired to say	मुझे निवेदन करने के लिए कहा गया है
123	I am directed to	मुझे निदेश हुआ है
124	I am to add	मुझे यह भी लिखना है
125	I am to say	मुझे यह कहना है कि
126	I authorize you	मैं आपको प्राधिकार देता हूं
127	I beg to submit	निवेदन है कि
128	If approved, a letter will be sent on the above line	यदि अनुमोदन करें तो उपर्युक्त सुझाव के अनुसार पत्र भेजा जाएगा
129	If fully agree with the office note	कार्यालय की टिप्पणी से मैं पूर्णतया सहमत हूं
130	I have been directed to inform you/request you/ask you	मुझे निदेश हुआ है कि मैं आपको सूचित करूं/आपसे निवेदन करूं/आपसे पूछूं
131	I have satisfied myself that the empolyee is not at fault	मैंने संतुष्टि कर ली है कि कर्मचारी की गलती नहीं है
132	I have the honour to say	सादर निवेदन है
133	Information has already been sent under this officer letter no......	इस कार्यालय के पत्र संख्या.....के द्वारा सूचना ही पहले भेजी जा चुकी है
134	In official capacity	पद की हैसियत से
135	In partial modification of	का आंशिक आशोधन करते हुए
136	Inspite of repeated reminders, the	बार–बार अनुस्मारक भेजने के बावजूद अभी

	information has not been received so far	तक सूचना नहीं मिली है.
137	Instructions are solicited	कृपया अनुदेश देने का अनुग्रह करें
138	In this connection it may be pointed out that	इस संबंध में यह उल्लेखनीय है कि
139	Inviting your attention to	की ओर आपका ध्यान आकर्षित करते हुए
140	Involving question of policy	जिसमें नीति का प्रश्न निहित हो
141	Irrespective of the fact	इस बात का विचार किए बिना
142	Is adjourned sine die	अनिश्चित काल के लिए स्थगित किया जाता है
143	I shall be obliged	मैं अनुगृहीत होऊंगा
144	Is hereby informed	को सूचित किया जाता है
145	It has been noticed that	यह देखा गया है कि
146	It has since been decided	अब यह निर्णय लिया गया है
147	It is matter of regret that	खेद कि बात है कि
148	It is difficult to proceed with the case	इस मामले में आगे कार्रवाई करना कठिन है
149	It is obvious that	यह स्पष्ट है कि
150	It is suggested	यह सुझाव दिया जाता है, सुझाव है
151	It may further be added	यह भी बताना उचित होगा, साथ ही
152	It is highly objectionable	यह बहुत ही आपत्तिजनक है
153	It will be construed	इसका यह अर्थ समझा जाएगा
154	Justification has been accepted	औचित्य स्वीकार कर लिया गया है
155	Keep pending	लंबित रखा जाए
156	Kindly expedite disposal	कृपया शीघ्र निपटान करें
157	Kindly instruct further	कृपया अनुदेश दें, कृपया आगे हिदायत दें
158	Kindly review the case	कृपया मामले पर पुनर्विचार करें
159	Liable to disciplinary action	अनुशासनिक कार्रवाई की जा सकती है
160	Liable to termination on one week's notice	एक सप्ताह के नोटिस पर समाप्त किया जा सकता है
161	Matter has been examined	मामले की जांच कर ली गई है
162	Matter is under consideration	विषय विचाराधीन है, मामला विचाराधीन
163	May be considered	विचार किया जाए
164	May be excused	क्षमा किया जाए, क्षमा करें
165	May be passed for payment	भुगतान के लिए पास करें
166	May be requested to clarify	से स्पष्टीकरण देने का अनुरोध करें
167	May be returned when done with	काम हो जाने पर लौटा दिया जाए
168	May be sanctioned	मंजूर/संस्वीकृत किया जाए
169	May be treated as urgent	इसे अति आवश्यक समझा जाए
170	May please furnish the requisite information	कृपया अपेक्षित सूचना दें
171	Necessary correction may be carried out	आवश्यक शुद्धि कर ली जाए
172	Necessary provision exists	आवश्यक प्रावधान मौजुद है
173	Necessary resort is still awaited	अपेक्षित रिर्पार्ट की अभी भी प्रतीक्षा की जा रही है
174	Necessary steps should be taken	आवश्यक कार्रवाई की जा चुकी है, अपेक्षित कार्रवाई हो चुकी है

175	No action necessary	कोई कार्रवाई आवश्यक नहीं
176	No action required	कोई कार्रवाई नहीं
177	No bar	कोई रोक नहीं
178	No profit no loss	न लाभ–न हानि, लाभ–हानि रहित
179	No progress has been made in the matter	इस मामले में कोई प्रगति नहीं हुई है
180	Noted for future guidance	भावी मार्गदर्शन के लिए नोट कर लिया
181	Nothing against the rule	नियमों के विरुद्ध बिल्कुल नहीं
182	Not traceable	पता नहीं लग रहा है
183	Notwithstanding	के होने पर भी, के होते हुए भी
184	Notwithstanding anything to the contrary	किसी प्रतिकूल बात के होते हुए भी
185	Office to note and comply	कार्यालय ध्यान दे और पालन करे
186	Order may be issued	आदेश जारी कर दिया जाय
187	Orders are solicited	कृपया आदेश दें
188	Otherwise action will be taken against him	अन्यथा उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी
189	Please submit your explanation on or before	कृपया अपना जवाब तारीख......को या इससे पहले दें
190	Please treat this as strictly confidential	इसे सर्वथा गोपनीय समझें
191	Please use Hindi in correspondence	कृपया पत्राचार में हिंदी का प्रयोग करें
192	Postpone for the present	इस समय स्थगित रखें
193	Put up for perusal please	अवलोकनार्थ प्रस्तुत
194	Put up for verification	सत्यापन के लिए प्रस्तुत करें
195	Quick disposal of claim	दावे का शीध्र निपटान
196	Quota alloted for staff	स्टाफ के लिए निर्धारित कोटा
197	Reasons for delay be explained	देरी/विलंब होने के कारण बताए जाएं
198	Relevant papers be put up	संबंधित कागज–पत्र प्रस्तुत किए जाएं
199	Reminder may be sent	अनुस्मारक भेजा जाए, स्मरण–पत्र भेज दें
200	Required information is furnished herewith	अपेक्षित सूचना इसके साथ भेजी जा रही है

सहायक ग्रन्थः

1. रामचंद्र सिंह सागर, कार्यालय कार्य विधि, आत्माराम एंड संस, नयी दिल्ली, 1963
2. चंद्रपाल शर्मा, कार्यालयीन हिन्दी की प्रकृति, समता प्रकाशन, दिल्ली, 1991
3. प्रज्ञा पाठशाला, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली
4. डॉ. विनोद गोदरे, प्रयोजनमूलक हिन्दी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009
5. दंगल झाल्टे, प्रयोगजनमूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016
6. कैलाश चन्द्र भाटिया, प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रकिया और स्वरूप, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2005
7. डॉ,. संजीव कुमार जैन, प्रयोगजनमूलक कामकाजी हिन्दी एवं कम्प्यूटिंग, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल
8. संतोष गोयल, हिन्दी भाषा और कम्प्यूटर; श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली
9. हरिमोहन, आधुनिक जनसंचार और हिन्दी, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली
10. हरिमोहन, कम्प्यूटर और हिन्दी, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली

11. पूरनचंद टंडन, भाषा दक्षता (भाग 01 से 04), किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, 2018
12. कुसुम अग्रवाल, अनुवाद शिल्प : समकालीन संदर्भ, साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली, 1999
13. 17. http:shabdavali.rbi.org.in/ (बैकिंग शब्दावली)
14. http:rajbhasha.gov.in/hi/hindi-vocabulary (विभिन्न पारिभाषिक शब्दकोश)

18. http://www.collinsdictionary.com/hi/dictionary/english-hindi (अंग्रेजी–हिन्दी शब्दकोश)

एम. ए. हिन्दी द्वितीय वर्ष

तृतीय सेमेस्टर

पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
MHNE503 (ख)	**मीडिया–लेखन**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :

मीडिया का क्षेत्र आज के समय में रोजगार का तो एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है ही, कुछ अच्छा कर गुजरने का भी एक बेहतर माध्यम है। इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को इस क्षेत्र से अवगत कराना, इस क्षेत्र को व्यवसाय के लिये चयनित करने हेतु उन्हें प्रेरित करना तथा इस हेतु दक्ष बनाना है।

क्रेडिट : 4	पूर्णांक : **25+75=100**	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**

कुल व्याख्यान संख्या : 60

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या
1.	मीडिया–लेखन : अभिप्राय एवं क्षेत्र; मीडिया–लेखन की विभिन्न विधाएं– समाचार लेखन, रेडियो वार्ता लेखन, नाटक लेखन, रेडियो नाटक लेखन, टी. वी. नाटक लेखन, नाट्य रूपान्तर, डॉक्यूमेंटरी लेखन, फीचर लेखन, फीचर फिल्म लेखन, विज्ञापन लेखन आदि।	15
2.	**सम्पादन कला :** सम्पादक का महत्त्व एवं कार्य, समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं के विभिन्न स्तम्भों की योजना; समाचार सम्पादन के आधारभूत तत्त्व; संवाददाता की कार्यपद्धति एवं अर्हता; समाचार संकलन के विविध स्रोत; प्रेस एवं पत्रकारिता सम्बन्धी महत्त्वपूर्ण शब्दावली।	15
3.	**रेडियो–लेखन :** वार्ता; नाटक; नाट्य–रूपान्तर; एंकरिंग; समाचार–वाचन; उद्घोषणा; भेंट–वार्ता; रूपक।	15
4.	**टेलीविजन एवं फिल्म लेखन :** डॉक्यूमेंटरी; फीचर; फिल्म तथा धारावाहिक लेखन; स्क्रिप्ट–लेखन; समाचार–वाचन; एंकरिंग; रिपोर्ट लेखन एवं प्रस्तुति तथा साक्षात्कार।	15

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी मीडिया–लेखन के विभिन्न आयामों से अवगत हो सकेंगे।
2. मीडिया–लेखन की विविध प्रविधियों को सीख सकेंगे।
3. मीडिया के क्षेत्र में कार्यरत होने के लिये प्रेरित हो अपेक्षित दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखने को बाध्य हो।

सहायक ग्रन्थः

1. रामचंद्र सिंह सागर, कार्यालय कार्य विधि, आत्माराम एंड संस, नयी दिल्ली, 1963
2. चंद्रपाल शर्मा, कार्यालयीन हिन्दी की प्रकृति, समता प्रकाशन, दिल्ली, 1991
3. प्रज्ञा पाठशाला, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली

4. डॉ. विनोद गोदरे, प्रयोजनमूलक हिन्दी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009
5. दंगल झाल्टे, प्रयोगजनमूलक हिन्दी : सिद्धांत और प्रयोग, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2016
6. कैलाश चन्द्र भाटिया, प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रक्रिया और स्वरूप, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2005
7. डॉ,. संजीव कुमार जैन, प्रयोगजनमूलक कामकाजी हिन्दी एवं कम्प्यूटिंग, कैलाश पुस्तक सदन, भोपाल
8. संतोष गोयल, हिन्दी भाषा और कम्प्यूटर; श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली
9. हरिमोहन, आधुनिक जनसंचार और हिन्दी, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली
10. हरिमोहन, कम्प्यूटर और हिन्दी, तक्षशिला प्रकाशन, नयी दिल्ली
11. पूरनचंद टंडन, भाषा दक्षता (भाग 01 से 04), किताबघर प्रकाशन, दिल्ली, 2018
12. कुसुम अग्रवाल, अनुवाद शिल्प : समकालीन संदर्भ, साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली, 1999
13. 17. http:shabdavali.rbi.org.in/ (बैकिंग शब्दावली)
14. http:rajbhasha.gov.in/hi/hindi-vocabulary (विभिन्न पारिभाषिक शब्दकोश)

18. http://www.collinsdictionary.com/hi/dictionary/english-hindi (अंग्रेजी–हिन्दी शब्दकोश)

एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष

तृतीय सेमेस्टर

पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
MHNE504 (क)	**भारतीय साहित्य**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :

भारत बहुभाषा भाषी देश है, किंतु भारत की विभिन्न संस्कृतियों में एक प्रकार की सूत्रबद्धता है। भारत की विभिन्न भाषाओं में साहित्य–सृजन हो रहा है और उसमें से बहुत सा महत्त्वपूर्ण साहित्य अब हिन्दी में अनूदित रूप में उपलब्ध है। भारत के किसी भी क्षेत्र और भाषाभाषी छात्र–छात्रा के लिये यह आवश्यक है कि वह अपनी भाषा से इतर दूसरी भारतीय भाषाओं का साहित्य भी पढ़े–समझे। हिन्दी के विद्यार्थी का अन्य भारतीय भाषाओं में लिखे जा रहे साहित्य से कुछ परिचय हो सके, इसी दृष्टि से इस प्रश्नपत्र के अन्तर्गत भारतीय साहित्य की कतिपय प्रमुख रचनाओं का समावेश किया जा रहा है। इनके माध्यम से विद्यार्थी भारतीय साहित्य से कुछ–न–कुछ परिचित हो सकेंगे और उनमें उसके और अध्ययन के प्रति रुचि जाग्रत हो सकेगी।

क्रेडिट : 4	पूर्णांक : **25+75=100**	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**

कुल व्याख्यान संख्या : 60

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या
1.	एक सांस्कृतिक इकाई के रूप में भारत; भारतीयता एवं भारतीय साहित्य की साहित्य की परम्परा; भारतीय साहित्य के अध्ययन की समस्याएं; बहुभाषा–सांस्कृतिकता और भारतीय साहित्य। भारतीय साहित्य–संस्कृति में एकतामूलक तत्व; भारतीय साहित्य में आज के भारत का बिंब ।	15
2.	**कविता :** सुब्रह्मण्यम भारती– **स्वतन्त्रता; नाचेंगे हम।** **रवीन्द्रनाथ ठाकुर– जहाँ चित्त भयशून्य** सीताकान्त महापात्र– **धान–कटाई; वर्षा की सुबह** रायप्रोलु वेंकट सुब्बाराव– **जन्मभूमि** चन्द्रकान्ता– **निष्काषितों की बस्ती में** उमाशंकर जोशी– **वर दे इतना; छोटा मेरा खेत** पद्मा सचदेव– **डोगरी** **पाठ्य–पुस्तक** : आधुनिक भारतीय कविता; सम्पादक– डॉ. अवधेश नारायण मिश्र, डॉ. नन्दकिशोर पाण्डेय; विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी **आलोचना के बिन्दु** : निर्धारित कवियों का साहित्यिक परिचय और पठित कविताओं का प्रतिपाद्य एवं साहित्यिक सौन्दर्य	15
3.	**उपन्यास :** **जय सोमनाथ**– कन्हैयालाल मणिक लाल मुंशी	15
4.	**कहानी एवं निबन्ध :** **चामर ग्राहिणी**– विश्वनाथ सत्यनारायण (तेलगू) **आईना**– येशे दोरजी थोंग्छी (असमिया) **उई–मोक– जमुना बीनी तादर** (अरुणाचली लोककथा) **स्त्री–पुरुष तुलना**– ताराबाई शिन्दे (मराठी) **भारत की सांस्कृतिक एकता**– गुलाब राय (हिन्दी)	15

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. हिन्दी साहित्य के साथ–साथ विद्यार्थी इस पत्र के माध्यम से भारतीय साहित्य की कतिपय प्रतिनिधि रचनाओं का अध्ययन कर उसके बारे में जान सकेंगे।
2. विद्यार्थी भारतीय साहित्य में निहित एकता विधायक तत्त्वों को जानकर विभिन्न भाषाओं के साहित्य और साहित्यकारों से तादात्म्य स्थापित कर सकेंगे तथा उनमें उसके व्यापक अध्ययन के प्रति रुचि उत्पन्न हो सकेगी।
3. विद्यार्थियों में भारत, भारतीयता एवं भारतीय साहित्य के प्रति एक गर्व का भाव उत्पन्न होगा तथा उनमें 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना सबल होगी।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखें।

सहायक ग्रंथ :

1. आज का भारतीय साहित्य, अनुवाद; प्रभाकर माचवे
2. भारतीय साहित्य; रामछबीला त्रिपाठी
3. भारतीय साहित्य; मूलचंद गौतम
4. भारतीय साहित्य के अध्ययन की नई दिशाएँ; प्रदीप श्रीधर
5. भारतीय साहित्य का समेकित इतिहास ; डॉ. नगेंद्र
6. भारतीय साहित्य की अवधारणा; राजेंद्र मिश्र
7. भारतीय साहित्य की पहचान; सं. सियाराम तिवारी
8. भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ; रामविलास शर्मा
9. भारतीय साहित्य; सं.– नगेंद्र; प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
10. भारतीय साहित्य; भोला शंकर व्यास
11. अरुणाचल प्रदेश की लोककथाएं; सम्पा.– नन्दकिशोर पाण्डेय और हरीशकुमार शर्मा; प्रभात प्रकाशन, दिल्ली; संस्करण–2022।
12. गाय–गेका की औरतें; जोराम यालाम; अनन्य प्रकाशन, दिल्ली; 2021।
13. डोगरी–कश्मीरी की लोकप्रिय कहानियाँ; सम्पा.– गौरीशंकर रैणा; प्रभात प्रकाशन, दिल्ली; संस्करण–2019।
14. तेलगू की लोकप्रिय कहानियाँ; सम्पा.– बालशौरि रेड्डी; प्रभात प्रकाशन, दिल्ली; संस्करण–2018।
15. लोकप्रिय आदिवासी कहानियाँ; सम्पा.– वन्दना टेटे; प्रभात प्रकाशन, दिल्ली; संस्करण–2017।
16. भाषा, साहित्य और संस्कृति; सम्पा.– विमलेश कान्ति वर्मा, मालती; आरिएंट ब्लैकस्वान प्रा. लिमि. दिल्ली; नवीन संस्करण।

एम. ए. हिन्दी द्वितीय वर्ष

तृतीय सेमेस्टर

पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
MHNE504 (ख)	**अवधी साहित्य**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :

भोजपुरी के साथ–साथ सिद्धार्थ विश्वविद्यालय का परिक्षेत्र अवधी से भी जुड़ता है। अतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 की भावना के अनुरूप भोजपुरी साहित्य के विकल्प के रूप में अवधी साहित्य का यह पत्र तैयार किया गया है। इस पत्र का उद्देश्य अवधी साहित्य से विद्यार्थियों का परिचय करवाना है। अवधी मध्यकाल में साहित्य–सृजन की एक प्रमुख भाषा रही है। इसलिये इस पत्र में प्राचीन एवं अर्वाचीन– दोनों प्रकार के प्रमुख साहित्यकारों के साहित्य का चयन किया गया है।

क्रेडिट : 4	पूर्णांक : 25+75=100	उत्तीर्णांक : 36 प्रतिशत

कुल व्याख्यान संख्या : 60

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या	क्रेडिट संख्या
1.	अवधी क्षेत्र और उसकी संस्कृति; अवधी साहित्य का स्वरूप और विशेषताएं; अवधी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास; अवधी साहित्य और लोक साहित्य; समकालीन अवधी लेखन; अवधी साहित्य में समाज–संस्कृति; अवधी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना; अवधी क्षेत्र के रचनाकारों का हिन्दी साहित्य को योगदान।	15	1
2.	**मलिक मुहम्मद जायसी :** **पद्मावत–मानसरोदक खण्ड**	15	1
3.	**तुलसीदास :** **रामचरितमानस–अयोध्याकाण्ड (चित्रकूट प्रसंग)**	15	1
4.	**आधुनिक साहित्य :** **काव्य–** पं. वंशीधर शुक्ल– **सलीमा** पढ़ीस– **महतारी** डॉ. विद्याबिन्दु सिंह– **गउवां–गिरउवां** डॉ. देवी सहाय पाण्डेय 'दीप'– **पतिया** **गद्य–** वंशीधर शुक्ल– **बेदखली** सत्यधर शुक्ल– **करनी का फल**	15	1

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी इस पत्र के अध्ययन से अवधी में रचित रचनाओं से अवगत हो सकेंगे।
2. साहित्य के माध्यम से अवधी संस्कृति के वैशिष्ट्य से भी उनका परिचय हो सकेगा।
3. अवधी और हिन्दी के अन्तर्सम्बन्धों को समझ सकेंगे और हिन्दी के विकास में अवधी के योगदान से भी अवगत हो सकेंगे।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखें।

सहायक ग्रंथ :

1. डॉ. प्रभाकर शुक्ल; मलिक मुहम्मद जायसी; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ।
2. रामलाल वर्मा, जायसी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व, भारतीय ग्रन्थ निकेतन, दिल्ली, 1979।
3. मुंशीलाल पाठक, मलिक मोहम्मद जायसी और उनका काव्य, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
4. डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी, मध्यकालीन धर्म साधना; साहित्य भवन, इलाहाबाद।
5. रामनरेश त्रिपाठी, तुलसीदास और उनकी कविता (भाग–1), हिन्दी मंदिर, प्रयाग, 1937।
6. राजपति दीक्षित, तुलसीदास और उनका युग, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी, 1953।
7. डॉ. भगवानशरण भारद्वाज (सम्पादक); तुलसी पंचशती स्मृति–पारिजात; योगक्षेम प्रकाशन, चित्रकूट, सिन्धुनगर, बरेली।
8. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
9. प्रो. हरीशकुमार शर्मा; तुलसी साहित्य का आधुनिक सन्दर्भ; प्रथम संस्करण–2012; साहित्य सहकार प्रकाशन, दिल्ली।
10. डॉ. रामविलास शर्मा एवं युक्तिभद्र दीक्षित (सम्पा.); पढ़ीस ग्रन्थावली; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ; संस्क. 1998।
11. डॉ. श्याम सुन्दर मिश्र मधुप (सम्पा.); वंशीधर शुक्ल रचनावली; उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ; संस्क. 2003।
12. जगदीश पीयूष (सम्पा.); अवधी ग्रन्थावली, खण्ड–4 (आधुनिक साहित्य खण्ड); वाणी प्रकाशन, दिल्ली।

<table>
<tr><td colspan="2" align="center">एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष</td></tr>
<tr><td colspan="2" align="center">तृतीय सेमेस्टर</td></tr>
<tr><td align="center">पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :
MHNP505</td><td align="center">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
हिन्दी शोध परियोजना</td></tr>
<tr><td colspan="2" align="center">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :</td></tr>
<tr><td colspan="2" align="center">क्रेडिट : 4</td></tr>
<tr><td colspan="2" align="center">कुल व्याख्यान संख्या : 60</td></tr>
<tr><td colspan="2" align="center">पाठ्यवस्तु</td></tr>
<tr><td colspan="2">इस पत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी किसी शिक्षक के निर्देशन में हिन्दी भाषा एवं साहित्य से जुड़े किसी विषय का चयन कर एक शोध परियोजना पर कार्य करेंगे।</td></tr>
</table>

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थियों को शोध का व्यवहारिक अभ्यास होगा।
2. पीएच.डी. करने से पूर्व विद्यार्थी शोध की सही प्रविधि जान सकेगे और शोध कार्य की वारीकियों को समझकर उसमें दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी के एक गम्भीर अध्येता तथा उत्कृष्ट शोधार्थी के रूप में विकसित होने में यह पत्र सहायक होगा।

एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष
चतुर्थ सेमेस्टर

पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
MHNC511	**हिन्दी की लम्बी कविताएँ**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
छायावादोत्तर हिन्दी काव्य बहुत व्यापक एवं विस्तीर्ण है। अतः कतिपय प्रतिनिधि कवियों और उनकी कविताओं के द्वारा इसकी प्रमुख विशेषताओं की जानकारी देना इस पत्र का उद्देश्य है।

क्रेडिट : **4**	पूर्णांक : **25+75=100**	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**

कुल व्याख्यान संख्या : 60

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या
1.	**ज्यशंकर प्रसाद– आँसू** **आलोचना के बिन्दु** : जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताएं; प्रसाद–काव्य में रहस्यवादी तत्त्व; 'आँसू' का प्रतिपाद्य; 'आँसू' का काव्य–सौष्ठव; प्रसाद–काव्य और वेदना; प्रसाद–काव्य में प्रकृति।	15
2.	**सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला– सरोज–स्मृति** **आलोचना के बिन्दु** : छायावादी काव्य और निराला; निराला का काव्य–वैविघ्य; 'सरोज–स्मृति' की काव्यगत विशेषताएं; 'सरोज–स्मृति' की प्रबन्धात्मकता।	15
3.	**अज्ञेय–असाध्य वीणा** **आलोचना के बिन्दु** : अज्ञेय–काव्य में प्रयोगधर्मिता; अज्ञेय की काव्य–भाषा; अज्ञेय–काव्य में प्रकृति और प्रेम; असाध्य वीणा का प्रतिपाद्य और समीक्षा।	15
4.	**मुक्तिबोध–अंधेरे में** आलोचना के बिन्दु : मुक्तिबोध की कविता में समाज–बोध; मुक्तिबोध के काव्य में फैन्टेसी; मुक्तिबोध की काव्यगत विशेषताएं; 'अंधेरे में' कविता का प्रतिपाद्य और समीक्षा।	15

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. इस पत्र के द्वारा विद्यार्थी छायावाद के आगे की कविता की महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियों को जान–समझ सकेंगे।
2. छायावादोत्तर प्रमुख कवियों के अवदान एवं उनकी काव्यगत विशेषताओं को जान सकेंगे।
3. आधुनिक काव्य–संवेदना से जुड़ सकेंगे।
4. काव्याभिव्यक्ति की नवन्नव और प्रभावी शिल्प–प्रविधियों को जान–समझकर अपने भीतर काव्य–समीक्षा तथा सृजन के आधुनिक कौशलों का विकास कर सकेंगे।

सहायक ग्रंथ :

1. राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा : संवेदना और शिल्प; डॉ. राहुल अवस्थी; प्रथम संस्करण–2012; राज पब्लिशिंग हाउस; जयपुर।

एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष

चतुर्थ सेमेस्टर

पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
MHNC512	**छायावादोत्तर काव्य**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :

छायावादोत्तर हिन्दी काव्य बहुत व्यापक एवं विस्तीर्ण है। अतः कतिपय प्रतिनिधि कवियों और उनकी कविताओं के द्वारा इसकी प्रमुख विशेषताओं की जानकारी देना इस पत्र का उद्देश्य है।

क्रेडिट : **4**	पूर्णांक : **25+75=100**	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**

कुल व्याख्यान संख्या : 60

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या
1.	**रामधारी सिंह दिनकर–उर्वशी (तृतीय सर्ग)** **आलोचना के बिन्दु** : दिनकर की कविता की पृष्ठभूमि; दिनकर के काव्य में राष्ट्र–भाव; दिनकर की काव्यगत विशेषताएं; 'उर्वशी' का प्रतिपाद्य एवं उद्देश्य	15
2.	**अज्ञेय**–कलगी बाजरे की; यह दीप अकेला; हरी घास पर क्षण भर; कितनी नावों में कितनी बार **आलोचना के बिन्दु** : प्रयोगवाद और अज्ञेय; अज्ञेय का काव्य–सौष्ठव; अज्ञेय–काव्य में प्रकृति और प्रेम।	15
3.	**नागार्जुन**–कालिदास; बादल को घिरते देखा है; अकाल और उसके बाद; शासन की बन्दूक। **आलोचना के बिन्दु** : नागार्जुन के काव्य में यथार्थ–चेतना और काव्य–दृष्टि; नागार्जुन का काव्य–सौष्ठव;	15
4.	**धर्मवीर भारती**–टूटा पहिया; कविता की मौत; फागुन की शाम **रघुवीर सहाय**–स्वाधीन व्यक्ति; आत्महत्या के विरुद्ध आलोचना के बिन्दु : रघुवीर सहाय की कविता में राजनीतिक चेतना; रघुवीर सहाय की काव्य–भाषा; धर्मवीर भारती और नयी कविता; धर्मवीर भारती की काव्य–संवेदना; घर्मवार भारती का काव्य–शिल्प।	15

पाठ्यक्रम परिणाम :

5. इस पत्र के द्वारा विद्यार्थी छायावाद के आगे की कविता की महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियों को जान–समझ सकेंगे।
6. छायावादोत्तर प्रमुख कवियों के अवदान एवं उनकी काव्यगत विशेषताओं को जान सकेंगे।
7. आधुनिक काव्य–संवेदना से जुड़ सकेंगे।
8. काव्याभिव्यक्ति की नवन्नव और प्रभावी शिल्प–प्रविधियों को जान–समझकर अपने भीतर काव्य–समीक्षा तथा सृजन के आधुनिक कौशलों का विकास कर सकेंगे।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखें।

सहायक ग्रंथ :

2. राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा : संवेदना और शिल्प; डॉ. राहुल अवस्थी; प्रथम संस्करण–2012; राज पब्लिशिंग हाउस; जयपुर।

<table>
<tr><td colspan="3" align="center">एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष</td></tr>
<tr><td colspan="3" align="center">तृतीय सेमेस्टर</td></tr>
<tr><td align="center">पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :
MHNE513 (क)</td><td colspan="2" align="center">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
हिन्दी साहित्य और सिनेमा</td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
आधुनिक युग में सिनेमा मनोरंजन का एक प्रमुख माध्यम है। हिन्दी सिनेमा की लोकप्रियता आज देश ही नहीं, विदेशों तक प्रसृत है। न सिर्फ यह लोगों का मनोरंजन करता है, अपितु जनमानस को काफी प्रभावित भी करता है। हिन्दी सिनेमा और साहित्य का आपस में गहरा सम्बन्ध है। हिन्दी के विद्यार्थियों को इन्हीं सम्बन्धों का बोध कराने के उद्देश्य से इस पत्र की रचना की गयी है।</td></tr>
<tr><td>क्रेडिट : 4</td><td>पूर्णांक :
25+75=100</td><td>उत्तीर्णांक : 36 प्रतिशत</td></tr>
<tr><td colspan="3" align="center">कुल व्याख्यान संख्या : 60</td></tr>
</table>

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या
1.	**हिन्दी सिनेमा और साहित्य का अन्तर्सम्बन्ध :** हिन्दी सिनेमा का उद्भव और विकास; हिन्दी सिनेमा के विविध आयाम; सिनेमा और साहित्य में अन्तर तथा पारस्परिक सम्बन्ध; हिन्दी सिनेमा के विकास में हिन्दी के साहित्यकारों का योगदान; हिन्दी सिनेमा और साहित्य के अन्तः–सम्बन्धों की परम्परा; हिन्दी की लोकप्रियता में हिन्दी सिनेमा का योगदान।	15
2.	**निम्नलिखित में से किन्हीं दो साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्मों एवं दूरदर्शन धारावाहिकों का समीक्षात्मक अध्ययन :** तीसरी कसम; गोदान; चित्रलेखा; देवदास; पिंजर; शतरंज के खिलाड़ी; रजनीगन्धा; सारा आकाश, तमस; निर्मला ।	15
4.	**हिन्दी फिल्मों के गीत :** फिल्मी गीतों एवं साहित्यिक गीतों में अन्तर; हिन्दी के साहित्यिक गीतों का हिन्दी फिल्मों पर प्रभाव; फिल्मी गीत और हिन्दी–उर्दू भाषा; हिन्दी लोकगीतों का फिल्मी गीतों पर तथा फिल्मी गीतों का हिन्दी लोकगीतों पर प्रभाव; हिन्दी फिल्मी गीतों की लोकप्रियता; फिल्मी गीतों के रचयिता प्रमुख कवि।	15
5.	**कथा एवं पटकथा :** पटकथा : अर्थ एवं आयाम; कथा एवं पटकथा का स्वरूप तथा लेखन–कला; कथा के पटकथा में रूपान्तरण की कला; पटकथा एवं संवाद–लेखन; साहित्य एवं सिनेमा की भाषा में अन्तर; प्रमुख पटकथा लेखक हिन्दी साहित्यकार।	15

पाठ्यक्रम परिणाम : इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी आधुनिक युग में मनोरंजन एवं जनसंचार के एक बहुत ही प्रभावी माध्यम हिन्दी सिनेमा का साभिप्राय अध्ययन करे सकेंगे।

1. हिन्दी साहित्य और सिनेमा के बहुआयामी अन्तर्सम्बन्धों को जान–समझ सकेंगे।
2. विद्यार्थियों में सृजनात्मक लेखन तथा सिनेमा में कैरियर–निर्माण की सम्भावनाएं जगत होंगीं।

प्रश्नपत्र का स्वरूप : इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखने को बाध्य हो।

<table>
<tr><td colspan="3">एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष</td></tr>
<tr><td colspan="3">चतुर्थ सेमेस्टर</td></tr>
<tr><td>पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :
MHNE513 (ख)</td><td colspan="2">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
पटकथा एवं विज्ञापन–लेखन</td></tr>
<tr><td colspan="3">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :
हिन्दी सिनेमा और विज्ञापन की दुनिया आज रोजगार का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। इस पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों को हिन्दी में सिनेमा एवं विज्ञापन के क्षेत्र में रोजगार के अवसरों से परिचित कराना और तदनुरूप उन्हें तैयार करना है। फिल्मों एवं टेलीविजन धारावाहिकों की पटकथाओं के लेखन से लेकर विज्ञापन–निर्माण तक के क्षेत्र, प्रविधि एवं सम्भावनाओं से उन्हें इसमें अवगत कराया जायेगा।</td></tr>
<tr><td>क्रेडिट : 5</td><td>पूर्णांक :
25+75=100</td><td>उत्तीर्णांक : 36 प्रतिशत</td></tr>
<tr><td colspan="3">कुल व्याख्यान संख्या : 75</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th>इकाई</th><th>पाठ्यवस्तु</th><th>व्याख्यान संख्या</th></tr>
<tr><td>1.</td><td>पटकथा का अर्थ एवं क्षेत्र; कथा एवं पटकथा; पटकथाकार के गुण; पटकथा का विचार (आइडिया); पटकथा के तत्त्व; पटकथा का स्वरूप और विस्तार; पटकथा–सम्बन्धी तकनीकी शब्दावली।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>2.</td><td>पटकथा का प्रारूप : दृश्य–योजना; ढांचा; सार; दृश्य–लेखन; शूटिंग–स्क्रिप्ट। पटकथा–लेखन की प्रक्रिया : कथावस्तु; पात्र एवं उनमें अन्तर्सम्बन्ध।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>3.</td><td>पटकथा–संवाद लेखन; संवादों की भाषा; कथा से पटकथा में रूपान्तरण की प्रक्रिया; वृत्तचित्र निर्माण; कैमरे का प्रयोग; डबिंग।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>4.</td><td>विज्ञापन : अभिप्राय एवं स्वरूप; विज्ञापन का इतिहास; विज्ञापन का महत्त्व; विज्ञापन के प्रकार; विज्ञापन के माध्यम; विज्ञापन एजेंसियां; विज्ञापन की आचार संहिता और कानून।</td><td>15</td></tr>
<tr><td>5.</td><td>विज्ञापन लेखन– मुद्रित विज्ञापन लेखन; रेडियो विज्ञापन एवं विज्ञापन लेखन की विशेषताएं; रेडियो विज्ञापन लेखन का स्वरूप एवं आवश्यक तत्त्व; टेलीविज्ञापन की आवश्यकताएं और स्वरूप; टेलीविज्ञापन की प्रविधि एवं प्रकार; विज्ञापनों की भाषा।</td><td>15</td></tr>
</table>

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी पटकथा–लेखन के क्षेत्र में रोजगार की सम्भावनाओं को जानकर उस दिशा में अपने को तैयार कर सकेंगे।
2. विज्ञापन–लेखन के क्षेत्र एवं प्रविधि से परिचित हो सकेंगे।
3. पटकथा एवं विज्ञापन–लेखन की बारीकियों को समझकर सम्बन्धित क्षेत्र में अपने भीतर अपेक्षित कौशल का विकास कर सकेंगे।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. कुल मिलाकर पांच प्रश्न पूछे जायेंगे, सभी प्रश्न अनिवार्य होंगे। प्रत्येक प्रश्न के लिये समान रूप से 15 अंक निर्धारित रहेंगे।
2. प्रथम प्रश्न में प्रत्येक इकाई से एक–एक टिप्पणी पूछी जायेगी। इस तरह विद्यार्थी को कुल पांच टिप्पणियां लिखनी होंगीं।

3. शेष चार प्रश्नों में से तीन प्रश्न किन्हीं तीन अलग–अलग इकाइयों से पूछे जायेंगे। प्रत्येक प्रश्न का विकल्प 'अथवा' करके पूछा जायेगा जो उसी इकाई से रहेगा।
4. अन्तिम पांचवा प्रश्न शेष दो इकाइयों से पूछा जायेगा। मूल प्रश्न एक इकाई से तथा उसी का विकल्प प्रश्न शेष अन्य इकाई से रहेगा।
5. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखने को बाध्य हो।

एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष	
चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNE514** (क)	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE CODE) : **हिन्दी लोक–साहित्य**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :

लोक साहित्य लोकरंजन का एक बहुत महत्वपूर्ण साधन रहा है। लोकरंजन के साथ लोकमंगल भी इसका प्रमुख साध्य तत्व है। नयी पीढ़ी शनैः–शनैः इससे विमुख एवं अनजान सी होती जा रही है। हिन्दी के विद्याथी के लोक साहित्य के प्रति इसी अपरिचय को दूर करने तथा उसकी उपयोगिता एवं वर्तमान में भी प्रासंगिकता का बोध कराने के उद्देश्य से इस पत्र की रचना की गयी है। इसके द्वारा विद्यार्थी लोक साहित्य के मात्र सैद्धान्तिक पक्ष से ही नहीं, अपितु उसके व्यवहारिक पक्ष से भी अवगत होकर उसे भली–भांति आत्मसात कर सकेंगे।

क्रेडिट : 4	पूर्णांक : **25+75=100**	उत्तीर्णांक : **36 प्रतिशत**

कुल व्याख्यान संख्या : 60

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या
1.	**लोक साहित्य का वैशिष्ट्य :** साहित्य एवं लोक साहित्य; लोक साहित्य एवं संस्कृति; लोक साहित्य की प्रासंगिकता; लोक साहित्य में प्रगतिशील तत्व; हिन्दी लोक साहित्य के विविध आयाम; लोक साहित्य का राष्ट्रीय एवं वैश्विक सन्दर्भ; लोक साहित्य तथा पर्यावरण।	15
2.	**लोकगीत :** मोर चरखा के टूटल न तार; जेहि दिन धिया के जनम भइलै धरती दुखित भइलिन (भोजपुरी); छोटहि पेड़वा ढेकुलिया कै पतवा झपसि गइलै (भोजपुरी); बाबुल तेरा सींकों का घरवा रे (खड़ी बोली); मैं तौ पहले जनौंगी धीय री (ब्रज) पुरुब पछौहां मोरे बाबा के बखरिया (अवधी); गौं गौं पंचायत करा (गढ़वाली)। **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : लोकगीतों में राष्ट्रीय चेतना; लोकगीतों में स्त्री–संवेदना; लोकगीतों में युगबोध; लोकगीतों में प्रकृति; लोकगीतों में लोकमंगलकारी भाव।	15
3.	**लोककथा :** राजा भोज और गंगू तेली (हिमाचली); पोपांबाई का राज (राजस्थानी); चतुर सेठानी (हरियाणवी); ठग–जग (छत्तीसगढ़ी) **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : लोककथाओं में समाज–संस्कृति; लोककथाओं में प्रगतिशीलता; लोककथाओं में जीवन–मूल्य एवं दर्शन; लोककथाओं में बुद्धि–चातुर्य एवं साहसिकता; लोककथाएं एवं शास्त्रीय कथाएं।	15
4.	**लोकगाथा** : **'आल्हखण्ड'** (आल्हा मनौआ)–पं. रामलग्न पाण्डेय 'विशारद' प्रकाशक–श्री ठाकुर प्रसाद पुस्तक भण्डार; कचौड़ी गली, वाराणसी–221001 **आलोचना के प्रमुख बिन्दु** : 'आल्ह खण्ड' : स्वरूप एवं प्रकृति; वीर रसात्मक काव्य परम्परा और 'आल्हखण्ड'; 'आल्हखण्ड' में सामन्ती संस्कृति; 'आल्हखण्ड' में वर्णन–वैविध्य; लोकगाथाओं की प्रभावशीलता और 'आल्हखण्ड'।	15

पाठ्यक्रम परिणाम :

इस पत्र के अध्ययन द्वारा विद्यार्थी हिन्दी लोक साहित्य की बहुत बड़ी थाती के महत्त्व को समझकर उस पर काम करने को प्रेरित होंगे।

1. सैद्धान्तिक के साथ लोक साहित्य के व्यवहारिक पक्ष को भी जान–समझ सकेंगे।
2. विद्यार्थियों में लोक साहित्य के पिछड़े लोगों का साहित्य होने की धारणा दूर होगी और वे अभिनव आयामों से लोक साहित्य एवं संस्कृति की महत्ता एवं प्राासंगिकता को समझकर उसके प्रति आकर्षित होंगे।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखें।

सहायक ग्रंथ :

1. लोक साहित्य विज्ञान; सं. सत्येन्द्र; वाणी प्रकाशन, दिल्ली।
2. लोक साहित्य की भूमिका; डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी।
3. लोक साहित्य विमर्श; डॉ. श्याम परमार, राजकमल प्रकाशन, वाराणसी
4. लोक साहित्य और संस्कृति; डॉ. दिनेश्वर प्रसाद, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
5. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास 16 वां भाग; नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
6. भाषा, संस्कृति और साहित्य; डॉ. हरीशकुमार शर्मा, अनंग प्रकाशन, दिल्ली।
7. फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यासों में लोक–संस्कृति; डॉ. हरीशकुमार शर्मा, जास्मिन पब्लिकेशन, दिल्ली।
8. अवधी लोकगीत विरासत; डॉ. विद्याविन्दु सिंह; ज्ञान विज्ञान एजूकेयर, दरियागंज, दिल्ली; संस्करण–2028।
9. लोकगीत संकलन; रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली; 1989।
10. गढ़वाली भाषा और साहित्य; डॉ. हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'; तिहन्दी समिति, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ; 1976।
11. हरियाणा की लोककथाएं; सम्पा.– निशा; प्रभात प्रकाशन, दिल्ली; संस्करण–2022।
12. छत्तीसगढ़ की लोककथाएं; सम्पा.– परदेशीराम वर्मा; प्रभात प्रकाशन, दिल्ली; संस्करण–2022।
13. हिमाचल प्रदेश की लोककथाएं; आशु फुल्ल; प्रभात प्रकाशन, दिल्ली; संस्करण–2022।
14. राजस्थान की लोककथाएं; महेन्द्र भानावत; प्रभात प्रकाशन, दिल्ली; संस्करण–2022।

एम. ए. हिन्दी	
चतुर्थ सेमेस्टर	
पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) : **MHNE514** (ख)	पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) : **भोजपुरी साहित्य**

पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में भारतीय भाषाओं के साथ ही मातृभाषाओं तथा लोक–भाषाओं को भी महत्त्व दिया गया है। विश्वविद्यालय का एक बड़ा परिक्षेत्र भोजपुरी–भाषी है। अतः विद्यार्थी अपने क्षेत्र की लोकभाषा में रचित साहित्य से भी परिचित हो सकें, इस दृष्टि से भोजपुरी साहित्य का यह पत्र विद्यार्थियों के लिये तैयार किया गया है। इस पत्र में अध्ययन हेतु भोजपुरी की कतिपय प्रतिनिधि गद्य–पद्य रचनाओं को चयनित किया गया है।

क्रेडिट : **4**	पूर्णांक : **25+75=100**	उत्तीर्णांक : **33 प्रतिशत**
कुल व्याख्यान संख्या : 60		

इकाई	पाठ्यवस्तु	व्याख्यान संख्या
1.	भोजपुरी क्षेत्र और उसकी आंचलिक संस्कृति; भोजपुरी साहित्य का स्वरूप और विशेषताएं; भोजपुरी साहित्य और लोक साहित्य; समकालीन भोजपुरी लेखन; भोजपुरी साहित्य में समाज–संस्कृति; भाजपुरी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना; भोजपुरी क्षेत्र के साहित्यकार और हिन्दी साहित्य।	15
2.	**काव्य :** गोरखनाथ–**सबदी** कबीर–**पद संख्या 1 से 9** बाबू रघुवीर नारायण–**बटोहिया** हीरा डोम–**अछूत के शिकायत**	15
3.	**काव्य :** मनोरंजन प्रसाद सिन्हा–**तब के जवान अब भइले पुरनिआ; फिरंगिया** धरीक्षण मिश्र–**कौना दुखे डोली में रोवति जाति कनियां** श्री रामजियावनदास बावला–**कौशल्या माई के सोच; किछु कहलो न जाला** गोरख पाण्डेय–**सपना; जागरण; समाजवाद**	15
4.	गद्य : विद्यानिवास मिश्र–**इमली के बीया** शिवप्रसाद सिंह–**कोजागरी** विश्वनाथ प्रसाद तिवारी–**पकड़ी के पेड़** हजारी प्रसाद द्विवेदी–**व्याख्यान**	15
5.	**नाटक एवं कहानी :** भिखारी ठाकुर–**गबरघिचोर** दण्डिस्वामी विमलानन्द सरस्वती– **किसान–भगवान** रामेश्वर सिंह काश्यप–**मछरी** विवेकी राय–**भंडेहरि** रामदेव शुक्ल–**तिसरकी आंख के अन्हार**	15

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थी इस पत्र के अध्ययन से भोजपुरी में रचित रचनाओं से अवगत हो सकेंगे।

2. साहित्य के माध्यम से भोजपुरी संस्कृति के वैशिष्ट्य से भी उनका परिचय हो सकेगा।
3. भोजपुरी और हिन्दी के अन्तर्सम्बन्धों को समझ सकेंगे।

प्रश्नपत्र का स्वरूप :

1. इस तरह प्रश्नपत्र का निर्माण इस तरह से किया जायेगा कि परीक्षार्थी सभी इकाइयों से प्रश्नों का उत्तर लिखें।

<table>
<tr><td colspan="4" align="center">एम. ए. हिन्दी, द्वितीय वर्ष</td></tr>
<tr><td colspan="4" align="center">चतुर्थ सेमेस्टर</td></tr>
<tr><td colspan="2" align="center">पाठ्यक्रम संख्या (COURSE CODE) :
MHNP515</td><td colspan="2" align="center">पाठ्यक्रम शीर्षक (COURSE TITLE) :
हिन्दी शोध परियोजना</td></tr>
<tr><td colspan="4" align="center">पाठ्यक्रम का उद्देश्य (Course objetives) :</td></tr>
<tr><td colspan="2">क्रेडिट : 4</td><td>पूर्णांक : 100</td><td>उत्तीर्णांक : 36 प्रतिशत</td></tr>
<tr><td colspan="4" align="center">कुल व्याख्यान संख्या : 60</td></tr>
<tr><td>इकाई</td><td colspan="2" align="center">पाठ्यवस्तु</td><td>व्याख्यान संख्या</td></tr>
<tr><td>1.</td><td colspan="2">इस पत्र के अन्तर्गत विद्यार्थी किसी शिक्षक के निर्देशन में हिन्दी भाषा एवं साहित्य से जुड़े किसी विषय का चयन कर एक शोध परियोजना पर कार्य करेगा और उस कार्य के आधार पर एक शोध–प्रबन्ध तैयार करेगा। शोध प्रबन्ध का मूल्यांकन आन्तरिक एवं बाह्य परीक्षक द्वारा किया जायेगा और विद्यार्थी की मौखिक परीक्षा भी ली जायेगी।
इस पत्र हेतु कुल पूर्णांक 100 होंगे, जिनमें से शोध–प्रबन्ध का मूल्यांकन 50 अंकों में किया जायेगा और 50 अंकों के लिये मौखिक परीक्षा होगी।</td><td>15</td></tr>
</table>

पाठ्यक्रम परिणाम :

1. विद्यार्थियों को शोध का व्यवहारिक अभ्यास होगा।
2. पीएच.डी. करने से पूर्व विद्यार्थी शोध की सही प्रविधि जान सकेगे और शोध कार्य की वारीकियों को समझकर उसमें दक्षता प्राप्त कर सकेंगे।
3. विद्यार्थी के एक गम्भीर अध्येता तथा उत्कृष्ट शोधार्थी के रूप में विकसित होने में यह पत्र सहायक होगा।